धर्म-शिक्षा

लेखक : स्वामी दर्शनानंद सरस्वती

प्रकाशक :

आर्य समाज, सीरू चौक, स्वामी दयानंद सरस्वती मार्ग,

उल्हासनगर-४२१ ००२.

द्वितीय संस्करण प्रतियां १००० मूल्य : १ रुपया

दो शब्द....

प्रिय जनों ! सज्जनों ! मेरी कई वर्षों से यह इच्छा थी कि मैं आम लोगों के आगे अपने धर्म के विषय में, धर्म और ज्ञान की कुछ बातें उपस्थित करूं ।

यह छोटीसी पुस्तिका, एक महात्मा ने लिखी है, जिसमें कई ग्रन्थों का अभिभाव प्रकट होता है, यूं कह दिया जाय कि गागर में सागर भर दिया गया है ।

आज के जमाने में टी वी. वीडिओ, सिनेमा देखने के लिए और गप्पे मारने के लिए हमारे पास बहुत समय है, किन्तु धार्मिक, आर्य ग्रन्थों का अध्ययन करने के लिये हमारे पास समय नहीं, रुचि नहीं, श्रद्धा नहीं ।

अगर आप इस छोटीसी पुस्तक का अध्ययन करेंगे तो हमें पूरा विश्वास है कि आप पक्के और सच्चे आर्य (हिन्दू) बनेंगे और आप का जीवन अवश्य अति पवित्र हो जायेगा ।

सेवा में,

नेणाराम आर्य

मंत्री

आर्य समाज सीरू चौक, स्वामी दयानन्द सरस्वती मार्ग

उल्हासनगर.

सूचना :—किसी भी प्रश्न का उत्तर चाहिए तो डबल कार्ड लिखिये ।

श्री गीता प्रिंटिंग प्रेस, सिंधुनगर-३. (७१०१६)

॥ ओ३म् ॥

धर्म शिक्षा

धर्म

खाने, पीने और सोने में तो मनुष्य और पशु समान हैं। मनुष्य में केवल ज्ञान अधिक है। जो मनुष्य ज्ञान से शून्य है, वह दो पैरों वाला पशु है। संसार की सारी चीजों में धर्म रहता है। जिस वस्तु का धर्म छूट जाए, उसका नाश हो जाता है। जैसे अग्नि का धर्म गरमी और प्रकाश है। जब तक अग्नि में प्रकाश है, तब तक ही जीव उससे डरता है और अग्नि के पास नहीं आता। हाथी अग्नि से डरता है, रीछ अग्नि से भय खाता है, भेड़िया अग्नि से दूर रहता है। ऐसे ही जब तक मनुष्य में उसका धर्म है, तब तक उसकी प्रतिष्ठा होती है। जब मनुष्य ज्ञान से खाली होता है, तब पशुओं से भी गिर जाता है।

धर्म - ग्रन्थ

वेद—ईश्वरीय ज्ञान का नाम वेद है।

शिष्य—गुरुजी, वेद कितने हैं ?

गुरु—वेद चार हैं।

शिष्य—कौन-कौन से ?

गुरु—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।

शिष्य—वेदाङ्ग कौन-कौन से हैं ?

गुरु—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष-ये वेद के छः अंग हैं।

शिष्य—गुरुजी, वेद के उपांग कौन-कौन से हैं ?

गुरु—न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदांत, ये वेद के उपांग हैं। इन्हींको छः शास्त्र और दर्शन भी कहते हैं।

शिष्य—क्या वेदांगों से ही ज्ञान हो जाएगा ?

गुरु—इनके अतिरिक्त उपवेद, ब्राह्मण तथा उपनिषदों के पढ़ने की भी आवश्यकता है।

शिष्य—उपवेद कितने हैं ?

गुरु—आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांधर्ववेद, अर्थवेद।

शिष्य—किस-किस वेद का कौन-कौन उपवेद है ?

गूरु—ऋग्वेद का आयुर्वेद, यजुर्वेद का धनुर्वेद, सामवेद का गांधर्ववेद और अथर्ववेद का अर्थवेद।

शिष्य-ब्राह्मण कितने हैं ?

गुरु-ब्राह्मण चार हैं।

शिष्य-कौन-कौन से ?

गुरु—शतपथ, गोपथ, ऐतरेय और सामविधान। यद्यपि और भी ब्राह्मण हैं, परन्तु पढ़ने के लिए यही ठीक हैं।

शिष्य—किस वेद का कौन ब्राह्मण है ?

गुरु-ऋग्वेद का ऐतरेय ब्राह्मण, यजुर्वेद का शतपथ, सामवेद का सामविधान, अथर्ववेद का गोपथ ब्राह्मण है।

शिष्य-उपनिषद् कितने हैं ?

गुरु-यूं तो आजकल लोगों ने बहुत से उपनिषद् बना रखे हैं, परन्तु उनमें से पढ़ने योग्य ग्यारह उपनिषद् हैं।

शिष्य-कौन-कौन से ?

गुरु—ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक, श्वेताश्वतर।

देवता

गुरु—माता, पिता, आचार्य और देवताओं का सत्कार करो।

शिष्य—देवता किसको कहते हैं ?

गुरु—देवता उसको कहते हैं जो प्रकाश करे। जो अपने स्वार्थ के लिए कोई काम न करे, वह देवता है। देवता दो प्रकार के हैं, एक जड़, दूसरे चेतन।

शिष्य—जड़ देवता कितने हैं ?

गुरु—जड़ देवता बत्तीस हैं, शेष दो चेतन देवता हैं।

शिष्य—कौन-कौन से हैं ?

गुरु—आठ वसु, ग्यारह रुद्र, बारह आदित्य, यज्ञ और विद्युत्। एक रुद्र चेतन जीवात्मा है। चौतीसवां देवों का देव परमेश्वर है, जो महादेव कहलाता है।

शिष्य—आठ वसु कौन से हैं ?

गुरु—सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये आठ वसु हैं।

शिष्य—ग्यारह रुद्र कौन से हैं ?

गुरु—दस प्राण और ग्यारहवां जीवात्मा, जिसके निकलने से लोग रोते हैं।

शिष्य—बारह आदित्य कौन से हैं ?

गुरु—बारह मास।

शिष्य–चेतन देवता कौन से हैं ?

गुरु–एक तो देवों का देव परमात्मा है, जो महादेव कहलाता है। दूसरे, जो पूर्ण विद्वान् हैं, वे भी देवता कहलाते हैं।

परीक्षा का स्थान

यह जगत परीक्षा का स्थान है। जो इसकी परीक्षा में उत्तीर्ण होता है, वह पूर्ण सुख को भोगता है। जो आलस्य और अज्ञान से संसार के विषय में फंस जाता है, वह सदा दुःखी रहता है। यह शरीर इष्ट साधन के लिए है, खाना–पीना सब शरीर रक्षार्थ है। जो मनुष्य इस उत्तम शरीर को खाने के निमित्त समझता है, वह बिना सींग और पूंछ का पशु है। जो बुद्धिमान् हैं, वह शरीर से मोक्ष प्राप्त करता है।

शिष्य—मोक्ष किसे कहते हैं ?

गुरु–बीजसहित दुःख का दूर होना और परमानन्द को प्राप्त करना, मुक्ति अथवा मोक्ष है।

शरीर-रूपी गाड़ी

गुरु–यह शरीर एक गाड़ी है, जिसमें बैठकर जीवात्मा मोक्ष प्राप्त करना चाहता है।

शिष्य-गाड़ी में तो घोड़े लगे होते हैं, शरीर की गाड़ी में कौन-कौन से घोड़े हैं ?

गुरु—दस इन्द्रियां अर्थात् पांच ज्ञानेन्द्रियां और पांच कर्मेन्द्रियां गाड़ी के घोड़े हैं।

शिष्य—पांच ज्ञानेन्द्रियां कौन-सी हैं ?

गुरु-आंख, नाक, कान, जिह्वा, त्वचा, ये पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं ।

शिष्य—पांच कर्मेन्द्रियां कौन-सी हैं ?

गुरु—हाथ, पांव, जीभ, पाखाने और मूत्र का स्थान, ये पांच कर्मेन्द्रियां हैं ।

शिष्य-घोड़ों के मुख में तो लगाम होती है, इन घोड़ों की लगाम कौन-सी है ?

गुरु मन लगाम है, जिसके रोकने से इन्द्रिय-रूपी घोड़े रुकते हैं ।

शिष्य-लगाम तो घोड़े को रोक नहीं सकती, जब तक रोकने वाला गाड़ीवान न हो ।

गुरु-बुद्धि गाड़ीवान है, जिसके वश में मन रहता है । जिसकी बुद्धि बिगड़ जाए वह इन्द्रियों का दास हो जाता है । जिसकी बुद्धि बिगड़ जाती है, वह दुःख पाता है । बुद्धिमान् पुरुष ही बलवान् होता है । निर्बुद्धि के क्या बल हो सकता है ।

धर्म के लक्षण

गुरु—संसार में सुख से रहने का उपाय धर्म है ।

शिष्य-धर्म किसे कहते हैं ?

गुरु-धर्म के दस लक्षण हैं ।

शिष्य—कौन-कौन से ?

गुरु-धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय-निग्रह, धी, विद्या, सत्य, अक्रोध ।

शिष्य—धृति किसे कहते हैं ?

गुरु-धृति धैर्य को कहते हैं। जब कोई पुरुष अच्छा काम करता है तो उसमें कठिनाइयां पड़ती हैं, उनसे न घबराकर कार्य करते जाना धृति है।

शिष्य—क्षमा किसे कहते हैं ?

गुरु—किसी निर्बल के अपराध करने पर दण्ड देने की शक्ति रखते हुए भी बदला लेने के त्याग का नाम क्षमा है।

शिष्य—दम किसे कहते हैं ?

गुरु—मन को रोकने का नाम दम है।

शिष्य—अस्तेय किसे कहते हैं ?

गुरु—चोरी को त्याग देने का नाम अस्तेय है।

शिष्य—चोरी किसे कहते हैं ?

गुरु—स्वामी की आज्ञा के बिना उसकी कोई भी वस्तु लेने का नाम चोरी है।

शिष्य—शौच किसे कहते हैं ?

गुरु—शरीर, मन, बुद्धि को मलिनता से बचा रखने का नाम शौच है। शरीर जल से पवित्र होता है, मन सत्य और सच्चे काम करने से और बुद्धि वेदों के ज्ञान से शुद्ध होती है।

शिष्य—इन्द्रिय-निग्रह किसे कहते हैं ?

गुरु—आंख, नाक, कान, त्वचादि इन्द्रियां, जो अपने विषयों की ओर सबको खींचती हैं, उनको अशुभ विषयों से हटाकर शुभ विषयों में लगाना, अर्थात् स्वयं इन्द्रियों के वश में न होकर उनको अपने वश में रखने को इन्द्रिय निग्रह कहते हैं।

शिष्य—धी किसे कहते हैं ?

गुरु—धी बुद्धि का नाम है। बुद्धि का बढ़ाना सब मनुष्यों का परम कर्तव्य है।

शिष्य–विद्या किसे कहते हैं ?

गुरु–जिससे मनुष्य की बुद्धि सहायता पाकर, संसार के पदार्थों के तत्त्व को जानती है, उसे विद्या कहते हैं।

शिष्य—विद्या कितने प्रकार की है ?

गुरु—एक सत्य विद्या और दूसरी सांसारिक विद्या कहलाती है। इन्हें परा विद्या और अपरा विद्या के नाम से भी पुकारा जाता है।

शिष्य—सत्य किसे कहते हैं ?

गुरु–अपने ज्ञान के अनुकूल कहने और करने को सत्य कहते हैं। वास्तव में सत्य का अर्थ यथार्थ है। उसको जिसके साथ मिलाएँ वैसा ही अर्थ होता है। जैसे, सत्य बोलना, सत्य करना, सत्य जानना इत्यादि।

शिष्य—अक्रोध किसे कहते हैं ?

गुरु–क्रोध के त्याग का नाम अक्रोध है।

विवेक से काम लो

प्रियजनों ! यदि तुम सत्य बोलोगे तो तुम्हें किसी से भय नहीं होगा। सत्य से आत्मा जीता और झूठ से मर जाता है। जो कुछ कहो, प्रमाण से परीक्षा करके कहो। जो कुछ खाओ, भक्ष्य-अभक्ष्य का विवेक करके खाओ। जो व्यवहार करो, हानि लाभ का विचार करके करो। जिसका

संग करो, सत्संग और कुसंग का विवेक करके करो। मनुष्यों और पशुओं में केवल विवेक का ही भेद है। विवेक से शून्य मनुष्य सींग और पूंछ रहित पशु है।

मनुष्य के जीवन और मृत्यु के प्रश्न

१-ईश्वर की उपासना जीवन और प्रकृति की उपासना मृत्यु है।
२-विद्या जीवन और अविद्या मृत्यु है।
३-सत्य जीवन और असत्य मृत्यु है।
४-धर्म जीवन और अधर्म मृत्यु है।
५-परोपकार जीवन और स्वार्थ मृत्यु है।
६-पुरुषार्थ जीवन और आलस्य मृत्यु है।
७-ब्रह्मचर्य जीवन और व्यभिचार मृत्यु है।
८-सादापन जीवन और सजावट मृत्यु है।
९-एकता जीवन और विरोध मृत्यु है।
१०-मित्रता जीवन और शत्रुता मृत्यु है।
११-वीरता जीवन और कायरता मृत्यु है।
१२-सत्संग जीवन और कुसंग मृत्यु है।
१३-सन्तोष जीवन और लोभ मृत्यु है।
१४-अहिंसा जीवन और हिंसा मृत्यु है।
१५-कृतज्ञता जीवन और कृतघ्नतां मृत्यु है।

प्रत्येक मनुष्य जीवन से प्रेम रखता और मृत्यु से डरता है, इस कारण उपर्युक्त मृत्यु के साधनों से घृणा करना उचित है।

चार प्रकार के मनुष्य

संसार में एक तो ऐसे मनुष्य हैं, जो सत्पुरुष कहाते हैं, जिनका जीवन कर्तव्य-कर्म में लगने से सफल है। दूसरे वे, जिनका जीवन बीच की दशा में है। तीसरे वे, जो राक्षस कहलाते हैं। चौथे वे, जिनके लिए कोई शब्द नहीं मिल सकता है।

शिष्य—महाराज ! सत्पुरुष कौन से हैं ?

गुरु—जो स्वार्थ को त्यागकर केवल परोपकार के लिए काम करते हैं, वे सत्पुरुष कहलाते हैं।

शिष्य—बीच वाले सामान्य पुरुष कौन हैं ?

गुरु—जो अपने और पराये दोनों कार्यों को साधते हैं, वे सामान्य पुरुष कहलाते हैं।

शिष्य—राक्षस कौन हैं ?

गुरु—जो अपने स्वार्थ के लिए दूसरों की हानि करते हैं, वे राक्षस कहलाते हैं।

शिष्य—चौथे कौन-से हैं ?

गुरु—जो अपना कुछ भी लाभ न हो, तो भी केवल शक्ति दिखाने के लिए दूसरों की हानि करते हैं।

तीन प्रकार के पुरुष

संसार में यनुष्य तीन प्रकार के होते हैं। पहले उत्तम दूसरे मध्यम, तीसरे नीच।

शिष्य—इनकी पहचान क्या है ?

गुरु—नीच पुरुष वे हैं जो विघ्नों के भय से काम आरम्भ ही नहीं करते, जब किसी काम को करने का विचार

करते हैं, तो विघ्नों का भय रोक देता है ।

शिष्य—मध्यम पुरुष कौन से हैं ?

गुरु—जो काम आरम्भ तो कर देते हैं, परन्तु जब विघ्न पड़ते हैं, तो छोड़ भागते हैं ।

शिष्य—उत्तम पुरुष कौन से हैं ?

गुरु—जो ईश्वर के विश्वास पर काम को आरम्भ कर देते हैं, फिर चाहे लाखों विघ्न पड़े, आरम्भ किए काम को कभी नहीं त्यागते । शरीर अनित्य है, इसका एक दिन अवश्य नाश होना है । जब शरीर न रहेगा तो सारी सांसारिक वस्तुएँ भी दूसरों की हो जाएँगी । इस कारण सांसारिक वस्तुओं का उपार्जन करने में समय खोना बुद्धिमान का काम नहीं ।

ज्ञान की बातें

१. ईश्वर के अनेक नाम हैं, उनमें से निज नाम ओ३म् है इसका जाप किया करो ।
२. वेदों में अनेक मंत्र है उनमें से महामंत्र गायत्री मंत्र है इसका जाप किया करो ।
३. असंख्य ग्रन्थ हैं उनमें से चार वेद ईश्वरीय ज्ञान है हर रोज इसका पाठ किया करो ।
४. इतिहास को बहुत ही पुस्तकें हैं । उनमें से रामायण और महाभारत मुख्य हैं, इनका अभ्यास किया करो ।
५. अनेक मत मतांतर हैं किन्तु वैदिक मत विश्व कल्याण के लिए है, इसका मान किया करो ।
६. इस संसार में अनेक जीव हैं उनमें से मानव, जीव ही अति उत्तम जीव है, सदुपयोग किया करो ।
७. पशु पक्षी भोग जूणी है, परन्तु मानव कर्म योनि है । अतः सेवा और ध्यान किया करो ।

८. इस पृथ्वी पर कई देश हैं उनमें से आर्यावर्त, भारतवर्ष अब जिसे हिन्दुस्तान भी कहते हैं सर्वश्रेष्ठ है, इस पर गर्व किया करो।

९. पूरे देश में व संसार में बहुत ही भाषाएँ हैं किन्तु संस्कृत भाषा सब भाषाओं की जननी है। इसका जरूर अभ्यास किया करो।

१०. आपस में मिलते समय अभिनंदन के लिए एक दूसरे को नमस्ते किया करो।

११. प्रथम सृष्टि की रूपरेखा और इन्सान की उत्पत्ति इस पवित्र देश आर्यावर्त में हुई।

१२. प्रत्येक भारतवासी आर्य है।

१३. हम ऋषि मुनियों की सन्तान हैं।

१४. भगवान ने दो लिंग (जिस्म) बनाये, स्त्री और पुरुष।

१५. भगवान ने दो जातियां बनाई, इन्सान और हैवान (पशू, पक्षी)

१६. मनुष्यों के दो वर्ग हैं, आर्य और अनार्य।

१७. ओ३म शान्तिः! शान्तिः!! शान्ति!!!

सत्यार्थ प्रकाश

महर्षि स्वामी दयानन्द कृत

१. ईश्वर क्या है? २. हम कौन है? ३. जीवन क्या है? ४. जीवन की रूपरेखा ५. गृहस्थ आश्रम ६. हमारी संस्कृति ७. हमारे देश पर अन्य लोगों ने राज कैसे किया? ८. बौद्ध और जैन कौन है? ९. ईसाईयों और मुसलमानों के गप्पे. १०. सच क्या है झूठ क्या है आदि——

इस ग्रन्थ के पढ़ने के बाद बाकी कोई प्रश्न व शंका नहीं रहेगा।

तीन बातें हमेशा याद रक्खें

तीन चीजें किसी का इंतजार नहीं करती।

समय, मौत, ग्राहक

तीन चीजें जीवन में एक बार मिलती हैं।

मां, बाप और जवानी

तीन चीजें निकलने पर वापस नहीं आती।

तीर कमान से, बात जबान से और प्राण शरीर से

तीन चीजें परदे योग्य हैं।

धन, स्त्री और भोजन

तीन चीजों से बचने की कोशिश करनी चाहिये।

बुरी संगत, स्वार्थ और निंदा

तीन चीजों में मन लगाने से उन्नति होती है।

ईश्वर, परिश्रम और विद्या

तीन चीजें कभी नहीं भूलनी चाहिये।

कर्ज, फर्ज और मर्ज

इन तीनों का सन्मान करो।

माता, पिता और गुरू

तीनों को हमेशा बस में रक्खो।

मन, काम और लोभ

तीनों पर सदा दया करो।

बालक, भूखे और पागल

दिन-चर्या

१- प्रत्येक व्यक्ति को ब्रह्म मुहूर्त में चार बजे जग जाना चाहिए ।

२- हाथ-मुंह धोने के बाद घड़े के जल का अपनी शक्ति के अनुसार जल का सेवन करना चाहिए ।

३- उचित स्थान पर बैठकर प्रातः कालीन के छह मंत्रों का अर्थ सहित पाठ करना चाहिए ।

४- प्रत्येक मनुष्य को दीर्घायु, रोग रहित आयु, स्वस्थ रहने के लिए प्राणायाम, व्यायाम, आसन जरूर करना चाहिए ।

५- शौच, स्नान साफ सफाई से निवृत्त होकर संध्या, यज्ञ, भजन, स्वाध्याय से मन प्रसन्न करना चाहिए ।

६- ऐसी दिन-चर्या आरम्भ करने से परिवार स्वर्ग-तुल्य अवश्य ही होगा । माता-पिता और बड़ों के चरण छूना, आदर करना, आज्ञा पालन करना, छोटों को प्यार देना, सबके साथ यथा-योग्य प्रीति-पूर्वक मधुर व्यवहार करना ।

७- हमेशा मुस्कराते रहना, रुचि सहित कार्य करना, सफलता की कुंजी है । बच्चों को विद्यालय जाना है, बड़ों को नौकरी पर जाना है, या अपना व्यवसाय करना है, बहनों को घर का कार्य करना है, यह सब हँसते-हँसते ।

८- पुत्रों, मित्रों, बहनों प्रभू के प्यारों सज्जनों सुबह को

खाओ, दोपहर को खाओ, शाम को खाओ, रात को खाओ, पर इतना खाओ जो आपके अनुकूल हो. पाचन शक्ति टूट न पाय. दूध, फल, रस प्रत्येक मानव के लिए ये सब पदार्थ उत्तम है ।

९- सायंकाल के समय वैसे ही संध्या, यज्ञ, भजन करना, घर में प्रवेश करने वालों को मुस्कराते हुए आना-जाना चाहिए । घर में बैठे हुओं को उनका स्वागत-अभिनन्दन नमस्ते आशीर्वाद प्रेम पूर्वक व्यवहार करना चाहिए ।

१०- खाना-पीना, मिलना-जुलना सभी कार्यों से निवृत्त होकर रात के नौ बजे सोते समय के छह मंत्रों का अर्थ सहित पाठ करना चाहिए ।

सूचना—ऐसी नित्य कर्म विधि करने वालों को और न करने वालों को आपस में ईर्ष्या, राग-द्वेष, वैर-भाव नहीं करना चाहिए । अधिक जानकारी के लिए आप मूलग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें ।

मन को प्रसन्न शान्त और स्वस्थ रखने के उपाय

(१) जहां जाय बिना काम चलता हो वहां मत जाओ ।

(२) जिस बात के कहे बिना काम चलता हो उसे मत कहो ।

(३) जिस चीज के बिना काम चल सकता है उसे मत खरीदो ।

(४) जिस काम के करने से समय नष्ट होता हो उसे मत करो ।

(५) जिस चीज के खाये बिना काम चल जाये उसे मत खाओ ।

(६) सर्वान्तर्यामी परमेश्वर को कभी मत भूलो । उसे सदा अपने अंग संग समझो ।

(७) वदिक सत्संग में अवश्य जाओ ।

सम्पर्क- 9029421718 - [illegible]

खण्डन-मण्डन ग्रन्थमाला-पुष्प सं० ४८

स्वर्ग विवेचन

लेखक—
(खण्डन मण्डन ग्रन्थमाला के समस्त ग्रन्थों के यशस्वी प्रणेता)
आचार्य डा० श्रीराम आर्य
कासगंज (एटा) उ०प्र०

प्रकाशक—
वैदिक साहित्य प्रकाशन
कासगंज (उ० प्र०) भारतवर्ष

दयानन्दाब्द १५५
तीसरी बार-] आर्य संवत् १९७२९४९०८१ [मूल्य ५५ पैसे
सन् १९८० ई०

ईसाई मत में स्वर्ग

बाइबिल में स्वर्ग को इस पृथ्वी के ऊपर कहीं आकाश में माना गया है। ईसाई खुदा यहोवा वहां रहता है उसके रहने को बड़ा मकान है। उसमें अनेक दरवाजे हैं और उनमें फाटक लगे हैं तथा प्रत्येक फाटक पर पहरेदार रक्षा के लिए नियुक्त हैं। खुदा एक बड़े सिंहासन पर बैठता है उसका खास इकलौता बेटा ईसा जिसे यहूदियों ने फांसी दे दी थी खुदा के दाहिनी ओर तख्त पर बैठता है। ईसाई खुदा ने उसे इस जमीन का सर्वाधिकार प्रदान कर रखा है कि जिसे चाहे वह मोक्ष दिलावे और जिसे चाहे वह दोजख में डाल देवे, जिसके चाहे पाप क्षमा कर देवे।

खुदा (यहोवा) के यहां स्वर्ग में करोड़ों स्वर्ग दूत रहते हैं, बीस करोड़ घुड़सवार सेना तथा बारह से भी ज्यादा फौजी पलटने [डिवीजनें] खुदा की रक्षा को तथा खुदा की ओर से उसके दुश्मनों से लड़ने को स्वर्ग में रहती हैं। सम्भवत: जो पादरी लोग मरकर स्वर्ग जाते होंगे उनसे उन फौजी घोड़ों की लीद बटोरने का काम ही लिया जाता होगा अन्यथा ये विचारे इस जमीन के काले पादरी और वहाँ क्या करेंगे।

ईसाई खुदा उस स्वर्ग से इस जमीन पर भी कभी २ तशरीफ लाता रहता था। कभी २ अपने पक्ष वालों के साथ युद्ध करने भी जाया करता था।

ईसाई स्वर्ग में सड़कें भी होती हैं। पर इस्लामी स्वर्ग की तरह वहां जाने वाले को ऐश करने के लिए हूरें व गिलमें नहीं मिल सकेंगे। शराब अवश्य मिलेगी ईसाई स्वर्ग में पता नहीं पहाड़ व मेवों के बागात भी है या नहीं? यह भी बाइबिल में नहीं बताया गया है कि बहिश्ती ईसाई जवानों व औरतों को खाना क्या मिलेगा, चाय बिस्कुट, मक्खन, अण्डे मिलेंगे या नहीं। शराब भी किस किस्म की मिला करेगी? ईसाइयों के बच्चे भी स्वर्ग जावेंगे या नहीं?

ईसाई स्वर्ग में एक बार शैतान [सर्प] से व उसके साथियों से मीकाएल व उसके साथियों से युद्ध भी हुआ था। स्वर्ग में भी झगड़े होते हैं, वहाँ भी शान्ति नहीं है।

बाइबिल के अन्तिम अध्याय में 'प्रकाशित वाक्य' में स्वर्ग का गप्पाष्टिकी हाल वर्णित किया गया है।

नरक का कोई खास वर्णन हमको बाइबिल में नहीं मिला है पर ईसाई नरक का एक स्थान विशेष मानते हैं। बाइबिल में 'नरक' के नाम का उल्लेख आता है।

इस्लाम में स्वर्ग (बहिश्त)

इस्लामी मजहब की मुख्य धर्म पुस्तक कुरान शरीफ में बहिश्त [स्वर्ग] के बारे में निम्न प्रकार उल्लेख मिलता है।

"जो लोग ईमान लाये और उन्होंने काम किये उनको शखबरी सुना दो कि उनके लिये बहिश्त के बाग है उनके नीचे नहरें बह रही होंगी। जब उनको उनमें का कोई मेवा खाने को दिया जाएगा तो कहेंगे, यह तो हमको पहिले ही मिल चुका है, और उनमें एक ही तरह के मेवे खाने को मिला करेंगे और यहां उनके लिये बीबियां पाक साफ होंगी और वे उनमें सदैव रहेंगे।" कु०पा० १ सू० वकर आ० २५ रु० ३

"जन्नत [स्वर्ग] और दोजख [नरक] के बीज में एक आड़ होगी यानी आराफ, उसके सिरे पर कुछ लोग हैं जो हर एक को उनकी शक्लों से पहिचानते हैं, जन्नत वालों को पुकारकर सलामालेकुम करेंगे।"

कु०पा० ८ सू० आराफ रु० ५ आ० ४६ ॥

'जन्नत के बागों में चश्ने होंगे....।' कु० पा० १२ सू० हूद रु० ६ आ० ४६ ॥

'इनको वहां [जन्नत] में किसी तरह का दुःख न होगा, न यह वहां से निकाले जावेंगे।' कु० पा० १४ सू० हिज्र रु०

[जन्नती लोगों को] वहाँ सोने के कंकन पहिनाये जावेंगे और वह महीन और मोटे रेशमी हरे कपड़े पहिनेंगे, और वहां तख्तों पर तकिये लगाये बैठेंगे....कु०पा० १५ सू० कहफ रु० ४ आ० ३१ ॥

नियामत के बागों में। ४३। तख्तों पर आमने सामने होंगे। ४४। इनमें साफ शराब का प्याला घुमाया जायेगा। ४५। सफेद रंग पीने वालों को मजा देगा॥ ४६। न उससे सर घूमते हैं, न उससे बकते हैं॥ ४७। और उनके पास नीचो निगाह वाली बड़ी आंखों की औरतें होंगी। ४८। गोया वह अण्डे छिपे रखे हैं। ४९। कु० पा० २३ सू० साफ्फात रु० २॥

रहने को जन्नत के बाग जिनके दरवाजे उनके लिये खुले होंगे। ५०। उनमें तकिया लगाये बैठेंगे, वहां जन्नत के नौकरों से बहुत से मेवे और शराब मँगावेंगे। ५१। उनके पास नीची नजर वाली हूरें होंगी और हमउम्र होंगी। ५२ कु० पा २३ सू० साद रु० ४।

'तुम और तुम्हारी बीबियां जन्नत में दाखिल हों ताकि तुम्हारी इज्जत की-जावे। ७०। कु० पा० २४ सू० जखरुफ रु० ७।

'बड़ी २ आंखों वाली हूरों से हम उनका ब्याह कर देंगे।'
कु०पा० २५ सू० दुखान रु० ३ आ० ५१॥

'जिस जन्नत का वायदा परहेजगारों से किया जाता है उसको कैफियत यह है कि उसमें ऐसी पानी की नहरें हैं जिनका स्वाद नहीं बदला और शराब की नहरें हैं जो पीने वालों को बहुत मजेदार मालूम होंगी, और साफ शहद की नहरें हैं, और उनके लिये वहाँ पर हर तरह के मेवे होंगे। १५ कु० पा० २६ स. मुहम्मद रु. २।

[बहिश्त में] उनकी औलाद को हम उनसे मिला देंगे। कु.पा.२७ सू. तूर रु. १ आ: २१।

उनमें पाक हूरें होंगी जो आंख उठाकर भी नहीं देखेंगी और जन्नत वासियों से पहिले न तो किसी आदमी ने उन पर

हाथ डाला होगा और न किसी जिन्न ने । १६। हूरे जो खीमे में बन्द हैं । ७२। कु० पा० २७ सू० रहमान रु० ३ ॥

उनके पास लौंडे [गिलमें] हैं जो हमेशा लौंडे ही बने रहेंगे । १८ । जिस किस्म के पक्षी का मांस उनको अच्छा लगे ॥ २४ ॥ हमने हूरों की एक खास किस्म पैदा की है । ३५। फिर उनको क्वारी बनाया है । ३६ । प्यारी २ हम उम्र वाली ।३७। यह सब दाहिनो तरफ बालों के लिये हैं । कु. पा. २७ सू. वाकिया रु. १ ॥

सुकर्मी प्याले पीलेंगे जिनमें कपूर मिला होगा ।५। न वहां धूप ही देखेंगे और न ठण्डा ।१३। उन पर चांदी के गिलासों का दौर चलता होगा कि वह शीशे की तरह होंगे ।१५। और वहाँ उनको प्याले पिलाये जायेंगे जिनमें सोंठ मिली होगी ।१७। एक चश्मा होगा जिसका नाम सलसरील होगा ।११। कु. पा. २९ स. दहर रु. २ ॥

गाव तकिये पंक्ति में लगे होंगे ।१५। मसनद बिछे होंगे ।१६। कु. पा. ३० सू. गाशियह रु. १ ॥

खाने को अँगूर और नौजवान औरतें हम उम्र कु. पा. ३० सू. नवा रु. २ आ. ३३। हमेशा रहने के बाग हैं जिनमें बे जायेंगे और उनके बड़ों और उनकी बीबियों और उनकी औलाद जो भला काम करने वाले होंगे। उनके साथ जायेंगें। जन्नत के हर दरवाजे से फरिश्ते उनके पास आते है।' कु. पा. १३ सू. राद रु. ३ आ. २३ ॥

'उनको खालिश शराब मुहर की हुई पिलाई जायेगी। जिस [बोतल] की मौहर कस्तूरी की होगी। और इच्छा करने वालों को चाहिए। कि उसी पर इच्छा करें।२६। और उसमें तसनीम [चश्मे] के पानी की मिलावट होगी ।२७। कु० पा० ३० सू० ततफीफ रु० १ ॥

'वह और उनकी बीबियाँ साये में तकिया लगाये तख्तों पर बैठी होगी।' कु. पा. २३ सू. यासीन रु. ४ आ. ५७ ॥

'उनके लिए जन्नत में खिड़कियों पर खिड़कियां बनी हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी ।। कु. पा. २३ सू. जुमर आ. २० ।।

मुकद्दमाये तफसीरुल्कुरान में स्वर्ग का वर्णन

इस जन्नत के हाल पर नजर करके उनके चहरों पर आराम की ताजगी होगी और उन्हें मुहर (सील) की हुई शराब पिलाई जाती होगी । याकूत लाल के मिम्बर पर सफेद खीमा (डेरों) में बैठे हुए होंगे जिनमें सब्ज (हरे) छापके बिछौने बिछे हुए होंगे और तख्तों पर तकिये लगे होंगे, वह खेमे शराब और शहद की नहरों के किनारों पर खड़े गुलामों और बच्चों से भरपूर गोरी-गोरी आँखों वाली स्त्रियों से आरास्ता (विभूषित) खुशखुल्फ (अच्छे स्वभाव) और खूब सूरतों से सुशोभित होंगे । वह हूरें याकूत और मूंगे के समान होंगी और उन्हें स्वर्ग निवासियों से पूर्व किसी ने आंख भर कर न देखा होगा । जन्नत के दर्जों में खुराम नाज नखरे करेंगी और जब उनसे कोई हूर तबख्तर (आलिंगन) करेगी तो उसके दामन का ७० हजार लड़के [गिलमे] उठायेंगे और उन पर सफेद रेशम की चादरें उस शोख रंग की होंगी जिन्हें देखकर आंखों में चकाचोंध उत्पन्न हो जाये । उन पर मोती और मूंगे जड़े होंगे । उनके सर पर ताज आंखों में लाल डोरे- नाजो अन्दाज की पुतलियाँ-लाल के मुहल्लों में पर्दानशीन नीची निगाहों वाली होंगी...... शराब खास उनमें परस्पर पिये जाएगी ।"

(कुरान परिचय पृ० १०६)

(जन्नत का हाल)

प्रत्येक महल में घर लाल सुर्ख के, और प्रत्येक घर में ७० कक्ष सब्ज जमुर्द के प्रत्येक कक्ष में तख्त हैं और प्रत्येक तख्त पर ७० फर्श हरे रंग के बिछे हैं । हर फर्श पर एक हूर बैठी हुई है । हर कक्ष में ७० दस्तरखान हैं, हर दस्तरखान पर ७०

रंग के भोजन हैं और हर कक्ष ७० लौंडियां [दासियाँ] हैं। हर ईमान वाले [मुसलमान] को प्रति दिन शक्ति दी जावेगी कि उन सब से ताल्लुक पैदा करें।"

कुरान परिचय भाग —३ पृ० ११४

हजरत अब्दुल्ला बिन हुमर ने फरमाया कि स्वर्ग के रहने वालों में से अदना मर्तवा (साधारण पद) का वह व्यक्ति होगा कि उसके ६० हजार सेवक होंगे और हर सेवक का काम अलग होगा।

हजरत ने फरमाया कि एक व्यक्ति ५०० हूरें, ४००० क्वारी औरतों, ८००० विवाहित औरतों से ब्याह करेगा और उनमें से प्रत्येक के साथ इतना सम्बन्ध करेगा जितना संसार में जीवित रहा होगा।

हजरत ने फरमाया कि स्वर्ग में एक बाजार है जहाँ पुरुषों और स्त्रियों के हुश्न (सौन्दर्य) के अतिरिक्त किसी और वस्तु का क्रय विक्रय नहीं होता। पास जब कोई व्यक्ति किसी हसीन स्त्री की ख्वाहिश करेगा वह उस बाजार में जायेगा। जहाँ बड़ी-बड़ी आंखों वाली हूर जमा हैं। वह इतनी ऊंची आवाज से कहती हैं कि किसी ने नहीं सुनी होगी। वह आवाज यह है-हम दायम कायम [सदा रहने वाली] हैं। हम कभी फना नहीं होंगी। मुवारिक [सौभाग्यशाली] है वह व्यक्ति जो हमारा हो और हम उसकी हों।"

हजरत अंस का ब्यान है कि मुहम्मद ने फरमाया कि स्वर्ग में हूरे गाती है 'हम सुन्दर दासियाँ हैं और हम प्रतिष्टित पुरुषों के लिए सुरक्षित है।" [कुरान परिचय पृ० ११७]

आपने फरमाया कि स्वर्ग निवासियों में छोटा वह होगा जिसके पास ८००० सेवक होंगे और ७२ पत्नियां [हूरें] होंगी।

[कुरान परिचय पृ. ११८]

जन्नत पर सरसैयद अहमद खां की सम्मति—

"यह समझना कि स्वर्ग एक बाग के रूप में उत्पन्न किया

हुआ है और उसमें संगमरमर और मोती के जड़ाऊ महल हैं, बाग में सरसब्जों शादाब (हरे भरे) वृक्ष हैं, दूध-शराब व शहद की नदियाँ बह रहीं हैं, और हर प्रकार की मेवा खाने को प्रस्तुत है। साकी व साकनीन [शराब देने वाले] अत्यधिक खूब सूरत चाँदी के गहने [कंगन] पहिने हुए जो हमारे यहां की घोसिनें पहिनती है शराब पिला रही हैं और एक स्वर्ग निवासी तक हूर के गले में हाथ डाले पड़ा है एक ने रान [जांघ] पर सिर धरा है, एक छाती से लिपट रहा है, एक ने लम्बे जांबख्श [प्राणदायी अधर] का बोसा [चुम्बन] लिया है, कोई किसी कौने में कुछ.............ऐसा वेहूदापन है जिस पर आश्चर्य होता है यदि स्वर्ग यही है तो विला मुवालिगा (बिना सोचे समझे) हमारे खराब्रात (वेश्यालय) इससे हजार गुणा उत्तम है।"

(तफसीरुल्कुरान–पृ. ३३ भाग १) कुरान परिचय पृ, १२१ से)

इस्लाम में दोजख (नरक)

"और (हे मौहम्मद) तू क्या जाने दोजख क्या चीज है। ।२७। शरीर को झुलसा देती है। २८। उस पर २८ चौकीदार हैं।३०। हमने फरिश्तों को आग (दोजख) का चौकीदार बनाया है और इनकी गिनती हमने काफिरों की जाँच के लिए ठहराई है।" ३१।। कु. पा. २८ सू. मुद्दसिर रु. १ ।।

"जिन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया वह बदवख्त होंगे ।१८। इनको आग में डालकर किवाड़ भेड़ दिए जावेंगे। २०।" कु. पा. ३० सू. वलद ।।

"बांई तरफ वाले (काफिर) वह आंच की भाप और गरम पानी में होंगे ।४२। सैहुड़ का दरख्त खाना होगा ।५२। उबलता पानी पोना होगा ।५४। जैसे प्यासे ऊंट पीते हैं।" कु. पा. २७ सू. बाकिया रु. २

"जब दोजख की तंग जगह में मुश्कें बांध कर डाल दिये जावेंगे तो वहां मौत को पुकारेंगे।" १३।। कु. पा. १८ सू. फुर्कान रु० २ ।।

'सैहुड का पेड़ एक दरख्त है जो दोजख की जड़ में उगता है ।६४। वे उसी को खायेंगे और उसी से पेट भरेंगे ।६६। फिर उनको उस पर खौलता हुआ पानी दिया जायगा । ६७। कु. पा. २३ रु: २, स. सा. ।।

"जब उस (दोजख) में डाले जायेंगे तो वह उसका दहाड़ना सुनेंगे, वह भड़क रही होगी ।' कु. पा. २६ सू मुल्क रु. ।१।

'इनकी गरदनों में तौक और जंजीरें होंगी" ७१ ।। कु. पा. २४ सू मोमिन रु. ८ ।।

'खौलता हुआ पानी और पीव (उनको पिलाया जायेगा) ।' कु पा. २३ सू साद रु. आ. ५७ ।।

इस्लामी सम्प्रदाय प्रवर्तक हजरत मुहम्मद साहब ने बहिश्त (स्वर्ग) में हूरें (औरतें) व लौंडे अय्यासी के लिए लालच देकर तथा वहां शराब गोश्त, मेवा आदि मिलने की बात कुरान शरीफ में लिखकर अय्याश मिजाज लोगों को इस्लाम ने खीचा था और उसका परिणाम यह हुआ था कि लाखों कम अक्ल नीचे लोग इस्लाम के चक्कर में इन्हीं प्रलोभनों के कारण फँस गये थे । यद्यपि सभी समझदार लोग जानते है कि ऐसे बहिश्त व दोजख की स्थिति विश्व भर में नहीं है। यह मिथ्या कल्पनायें हैं ।

जैन मत में स्वर्ग

जैन ग्रन्थ भगवती सूत्र प्रथम भाग में लिखा है—

'मृत्यु लोक से राजू पर्यन्त क्षेत्र को पार करके उर्ध्व लोक अर्थात् स्वर्ग लोक है । उसकी पृथ्वी श्वेत स्वर्णमयी है । उसके ऊपर बैकुण्ठवासी देवताओं के मकान हैं। वहा गर्भ के बिना देवताओं की उत्पत्ति होती है । जब देवता उत्पन्न होने को होता है तो शैया का वस्त्र तन्दूर की रोटी की तरह फूल जाता है और विमानवासी देव और देवियां थेई-थेई मंगल गाने लगते हैं। पुन: वह उत्पन्न होने वाला देव ३२ वर्ष का जवान उत्पन्न होकर बड़ा चकित होता है और चाहता है कि इस

आश्चर्य मयी रचना का हाल मृत्यु लोक में जाकर लोगों को कहे। परन्तु देव और देवियाँ उसको कहती हैं कि स्नान आदि तो करलें। बस वह स्नान करने चला जाता है और पुनः उसके देव और देवियां बड़े सुगन्धित पदार्थ बनाती हैं, और अप्सरायें नाचने लगती हैं और नाटक करने लगती हैं। इस एक ही नाटक में २००० वर्ष बीत जाते हैं। बस पुनः वह मृत्यु लोक को भूल जाता है, और बिना कारण देव पुनः मृत्युलोक में नहीं आते। पहिले स्वर्ग में देव काम भोग आदि करते हैं। दूसरे स्वर्ग में स्पर्श से ही आनन्द मानते हैं। तीसरे स्वर्ग में दर्शन मात्र से ही काम तृप्ति हो जाती। चतुर्थ स्वर्ग में देव मानसिक भोग भोगते हैं। उससे आगे काम आदि भोग नहीं हैं। (जैनमत दर्पण भाग ५ से)

इससे सिद्ध है कि जैनियों के कल्पित स्वर्ग में भी विषय भोगों को ही परम सुख माना गया है। उनके चारों स्वर्गों में विषय भोगों के सुख की प्रधानता रहती है। किसी में जैन अप्सरायें मिलती हैं, जिससे प्रत्यक्ष सम्भोग होता है, किसी में स्पर्श से किसी में उन सुन्दरी औरतों को देखकर सन्तोष करना पड़ता है। चौथे स्वर्ग में मूर्खों की तरह मन में उनके साथ विषय करने की कल्पना करके ही स्वर्गस्थ जैनियों को स्वप्नदोष होते रहते हैं और वे विचारे मजदूर ब्रह्मचारी बने रहते हैं। वहां उन्हें सम्यक दर्शन, सम्यक आचरण, सम्यक चरित्र आदि के पालन न करने की कोई आवश्यकता नहीं रहती है।

जैनियों का मुक्ति लोक इनके कल्पित स्वर्ग लोकों से प्रथम इस पृथ्वी के ऊपर कहीं पैंतालीस लाख योजन लम्बी चौड़ी शुद्ध श्वेत स्फटिक के समान अर्ध चन्द्राकार सिद्ध शिला है जहाँ इनके मुक्त जैनी पद्मासन लगाये आँखें बन्द किये ध्यानावस्थित दशा में पत्थर की मूर्ति के समान सदा सर्वदा जड़वत् बैठे रहते हैं। न कभी उसके बाहर जाते आते हैं, न हिलते डोलते हैं,

अनन्त मुक्ति मिलने पर भी न जाने वे विचारे किस वस्तु के लिए किसका ध्यान करते रहते हैं, यह बात जैन साहित्य में स्पष्ट नहीं की गई है।

जैन साहित्य में यह भी हमारे देखने में नहीं आया है कि स्वर्ग में जाने वाले को जैन देवता बनने पर किसी अप्सरा से बाकायदा विवाह कर दिया जाता है, या वहाँ उसकी तफरीह के लिए इस पृथ्वी की वैश्याओं के समान वैश्यालय वा अप्सरालय बने होते हैं तथा वहाँ शौक पूरा करने की कोई फीस भी देनी पड़ती है या जैनियों के लिए वहां उनके बाजार में निःशुल्क पास दिए जाते हैं ? अथवा कोई गैर जैनी शौकीन पहुंच जावे तो क्या उस स्वर्ग में उसकी भी गुजर-बशर का प्रबन्ध हो सकता है या नहीं ? क्या वहाँ मेवे, घी दूध भो मिलता है या नहीं ? क्या वहाँ रेडियो सिनेमाघर, बाग बगीचे भी हैं या नहीं कोकोकोला, चाट पकौड़े, डबलरोटी बिस्कुट, चाय के होटल, पान बीड़ी आदि दुकानें भी हैं या नहीं ? सवारी को व घूमने को वहां क्या साधन हैं ? पहिनने को वस्त्र ऊनी सूती, टेरीकोट रेशम आदि के मिलते हैं या नहीं ? सोने को सोफसैट, बढ़िया पलंग आदि की क्या व्यवस्था रहती है या जमीन पर ही सोना पड़ता है ?

जैनबन्धु यदि इन सब बातों का पता लगाकर ठीक २ हाल भी छपा देवें तो बहुत उत्तम बात होगी। लोगों का वहां जाने से पहिले हर बात को जानकारी देना उपयुक्त होगा।

पौराणिकों के स्वर्ग

देवी भागवत पुराण में स्वर्ग, बैकुण्ठ तथा शिवजी के कैलाश की स्थिति हिमालय पर्वत पर बताई है। निम्न श्लोक द्रष्टव्य है-

एक सृष्टि समुत्पाद्य भगवानकमलोदभवः
चकार ब्रह्मलोकं च मेरु श्रृंगे मनोहरम् ॥ १७॥

बैकुण्ठ भगवान्विष्णु रमारमण मुत्तमम्।
क्रीड़ास्थानं सुरम्यं च सर्वलोको परिस्थितम् ॥ १८॥

शिवोऽपि परमं स्थानं कैलासाख्यं चकारह ।
समासाद्य भूतगणं विजहार यथा रुचि ॥ १६ ॥

स्वर्गस्त्रिष्टयो मेरु शिखरोपरि कल्पितः ।
तच्च स्थानं सुरेन्द्रस्यं नानारत्न बिराजितम् ॥२०॥

देवी भागवत स्क. ३ अ. ११॥

अर्थ—कमलोद्भव देव ब्रह्मा जी ने सृष्टि उत्पन्न की, उनका ब्रह्मलोक भी हिमालय पर्वत पर है। विष्णु भगवान का क्रीड़ास्थल भी वहीं पर सबसे ऊपर है । शिवजी ने अपना श्रेष्ट स्थान कैलाश भी वहीं पर बनाया हुआ है जहाँ पर वे भूत (भूतिया वा भोटिया जाति के) लोगों में रहते हैं । इन्द्र का स्वर्ग भी मेरु पर्वत पर तिब्बत पर माना गया है जहाँ अनेक प्रकार के दिव्य रत्न भी विद्यमान हैं ।

इससे स्पष्ट है कि विदेशों के स्थान ब्रह्मलोक, विष्णुलोक तथा शिवजी का कैलाश भी हिमालय पर स्थित है और स्वर्ग भी तिब्बत को माना गया है वहीं के राजा की उपाधि 'इन्द्र' थी ।

स्वर्ग में कामधेनु गौ, अप्सराय देवी, देवताओं का निवास माना गया है। स्वर्ग को पौराणिक मत में सर्वानन्दमय स्थान विशेष माना है। गीता ने लिखा है कि मनुष्य सत्कर्मों (यज्ञ) के प्रभाव से स्वर्ग को प्राप्त करते हैं जहाँ का राजा देवताओं का राजा इन्द्र है ।

त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा यज्ञैष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते ।
ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्र लोकमश्नन्ति दिव्यान्दिवि देव भोगान् ।२०।
ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं, क्षीणेपुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति
एवं त्रयीधर्ममनु प्रपन्ना, गतागतं काम कामा लभन्ते ॥ २१॥

गीता अ ६ ॥

अर्थात् वेदों को जानने वाले, सोमरस पीने वाले, पापों से पवित्र लोग यज्ञ के द्वारा स्वर्ग की प्रार्थना मुझे पूज कर करते है। वे पुण्य के प्रभाव से देवराज इन्द्र के लोक स्वर्ग को प्राप्त

करके वहाँ नाना प्रकार के दिव्य भोग भोगते हैं। जब वे अपने कर्मानुसार फल भोगकर चुकते हैं तो पुण्य क्षीण होने पर पुनः मृत्युलोक (इस पृथ्वी) पर आकर जन्म लेते हैं। इस प्रकार वेदों में वर्णित कर्म करने वाले लोग मेरी शरण होकर भी बारम्बार आवागमन के चक्र में फँसते रहते हैं।

गीता पौराणिक पुस्तक है। उसने भी इन्द्र के स्वर्ग में भोग भोगने को जाना तथा वहां से फिर पृथ्वी पर आकर जन्म लेना लिख दिया है। किन्तु विद्वान जानते हैं कि स्वर्ग (तिब्बत) में कोई दिव्य भोग नहीं है। अतः स्वर्ग में कोई दिव्य भोग नहीं है अतः स्वर्ग में दिव्य भोग भोगने की सारी कल्पना गीताकार की कोरी गप्पाष्टक है।

साहित्यकारों ने कश्मीर को भी इस पृथ्वी का स्वर्ग माना है। प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर स्थल काश्मीर को वास्तव में स्वर्ग मानना समीचीन है। वहां की स्त्रियां सौन्दर्य सम्पन्न होती है पुरुष भी सुन्दर होते हैं। अतः देवी तथा देवता उन्हीं को पुराणकारों ने लिखा है। यह स्वर्ग इस पृथ्वी से प्रथक कोई अन्य स्थान नहीं है स्थान विशेष की कल्पना तथा उसे आकाश में ऊपर कहीं मानना, यह साम्प्रदायिक लोगों की धर्म भीरु जनता को प्रभावित करते की गढ़ी गई कल्पना मात्र है।

पौराणिक मत वालों ने स्वर्ग तो एक ही माना है किन्तु नरक २८ माने हैं जिनके नाम निम्न प्रकार हैं—

तमिस्र-अन्धता मिस्र–रौरव-महारौरव–कुम्भीपाक–कालसूत्र असि पत्रवन-सूकरमुख–अन्धकूप–कृमिभोजन–सन्दंश–तप्त भूमि बज्रकन्ट जशाल्मली वैतरणी—पूयोद—प्राणरोध—विशाशन लालाभक्ष-सारमेयादन अवीचि—अयःपान—क्षारकर्दम–रक्षोगण शूलप्रोत–दन्दशूक-अवटनिरोधन –पर्यावर्तन–सूचीमुखा भोजन। (भागवत ५।६६।७)

पौराणिकों का कल्पित स्वर्ग स्थान हमारी पृथ्वी का तिब्बत

ही था वहां के राजा की गद्दी इन्द्र की गद्दी थी व जोभी राजा उस पर बैठता था वह इन्द्र कहा जाता था।

इसी प्रकार भूटान प्रदेश के राजा की गद्दी महादेव की गद्दो थी उस पर बैठने वाले को शिवजी वा शंकर वा महादेव जी कहते थे। भूत जाति के नाथ (स्वामी) होने से उनको भूतनाथ कहते थे। भूटान शब्द भूत शब्द से बिगड़कर भूताल वा भूटान बन गया है और भूत जाति भूतिया वा भोटिया कही जाने लगी है।

विष्णु मानसरोवर के आसपास के क्षेत्र के राजा की गद्दो थी उस पर बैठने वाला विष्णु कहा जाता था। मानसरोवर वह क्षेत्र है जहाँ प्रारिम्भक मानव सृष्टि हुई थी। इसीलिये मानसउर्वर-मानसरोवर उसका नाम पड़ा है मानसरोवर जलाशय को ही विष्णु का क्षीर सागर पुराणों में माना है।

ब्रह्मा हिमाचल के राजा को गद्दो पर बैठने वाले राजा की उपाधि थी।

इस प्रकार पौराणिक ब्रह्मा-विष्णु-महादेव व इन्द्र हमारी पृथ्वी के हिमाचल प्रदेश के राजाओं की उपाधियां थीं। पर्वतीय पुरुष को देवता व वहां की स्त्रियों को देवियां कहा गया है।

आपः का अर्थ जल होता है। बर्फीले पर्वतीय प्रदेशों की रहने वाली देवियों को उसी आधार पर अप्सरायें कहा गया है। उन प्रदेशों व वहां के निवासियों का वर्णन जो संस्कृत के कवियों ने किया है उसमें उनकी विलक्षणता दिव्य योनिधारी देवताओं की कल्पना के रूप में की है सौन्दर्य में पर्वतीय शीतल प्रदेशों के निवासी मैदानी उष्ण प्रदेशवासियों की अपेक्षा विशेषता रखते हैं, यह प्रयत्क्ष ही है।

विष्णु पुराण में २८ नरक निम्न प्रकार बताये हैं—जो भागवत की सूची भिन्न हैं—

रौरव सूकर--रोध-ताल–विशसन—महा ज्वाल-तप्त कुम्भ लवण-विलोहित-—रुधिराम्भ—वैतरणि--कृमीश–कृमिभोजन–

असिपत्रवन-कृष्ण–लालभक्ष–दारुण–पूयवह्—पाप—वन्हि ज्वाल अध:शिरा–सन्दशं-कालसूल-तमस आवीचि-श्वभोजन–अप्रतिष्ठ-अप्रचि। यह २८ नरक विष्णु पुराण अंश २ अ. २६ श्लोक २ से ६ तक में बताये गये हैं।

दोनों पुराणों की सूचियां परस्पर विरुद्ध नामों वाली होने से दोनों ही स्वत: अमान्य सिद्ध हैं। स्वर्ग व नरकों की कल्पनायें कवियों की अपनी कल्पनायें रहीं हैं। उनका अस्तित्व कभी नहीं रहा है।

वैदिक धर्म में स्वर्ग

वैदिक धर्म में स्वर्ग का अर्थ सुख एवं सुख की सामग्री तथा वह स्थान वा परिवार है जिसमें मनुष्य को कष्टों का अभाव हो तथा सुख भरपूर मिल सके। यह स्वर्ग परिवार में अथवा अन्यत्र इसी पृथ्वी पर तथा मानव योनि में ही प्राप्त होना सम्भव है।

अथर्व वेद ४।३४ में ग्रहस्थाश्रम को स्वर्ग माना गया है। वहां ग्रहस्थ का वर्णन करते हुए एक मन्त्र दिया है—

अनस्था: पूता: पवनेन शुद्धा: शुचय: शुचिमपि यन्ति लोकम्।
नैषाँ शिश्नं प्र दहति जात वेदा: स्वर्ग लोके बहु स्त्रौणमेषाम्॥

(अनस्था:) जिन ब्रह्मचारियों वा पुरुषों के शरीर मांसल हैं, अस्थि मात्र नहीं है (पूता:) पवित्र है (पवनेनशुद्धा:) प्राणायामादि से भी शुद्ध किए हुए हैं (शुचय:) ऐसे पवित्र लोग (शुचिम् लोकम् योना) पवित्र गृहस्थाश्रम को (अपियन्ति) प्राप्त करने के अधिकारी होते हैं। ऐसे तपस्वी संयमी व्यक्तियों वा ब्रह्मचारियों को (स्वर्ग लोक) परम सुखदायक गृहस्थाश्रम में (बहु स्त्रीणां) वे बहुत सी स्त्रियों के परिवार से घिरे होते हैं, वहां बहिन, मां, पत्नी, बेटी अड़ोस पड़ोस की स्त्रियां उनको मिलती हैं, किन्तु (एषाँ) उन व्यक्तियों की (शिश्नम्) शिश्नेन्द्रिय को (जातवेदा:) परमेश्वर (न प्रदहन्ति) काम वासना व रोगाग्नि से पीड़ित नहीं करता है अर्थात गृहस्थाश्रम में रहते हुए भी वे संयम शील रहते हैं।

वैदिक धर्म में स्वर्ग उसी स्थित को कहा है जिसमें दुःखों का अभाव व जीवन का आनन्द प्राप्त हो सके। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने स्वमन्त व्यामन्तव्य में लिखा है कि स्वर्गनाम–सुख विशेष भोग और उसकी सामग्री को प्राप्त का है। नरक जो दुःख विशेष भोग और उसकी सामग्री भी प्राप्त होना है।

स्वर्ग में अप्सराओं की प्राप्ति की कल्पना जो पुराणकारों ने की है वह वेद मन्त्र को ठीक से न समझने के कारण की है। और उनकी ही देखा देखी जैन तथा मुसलमानों ने भी वहिश्त (स्वर्ग) में देवियां वा हूरें मिलने की कल्पना कर डालो है। यह सारी कल्पनायें विषयी लोगों को प्रभावित व अपने मतों में स्त्रियों का प्रलोभन देकर आकर्षित करने के लिए की गई थीं। इनमें तथ्य की कोई बात नहीं है।

जो सत्कर्मी लोग शारीरिक आत्मिक एवं मानसिक दृष्टि से शुद्ध होते हैं, जिनके पास सुख के सभी साधन पुरुषार्थ अथवा भाग्य से उपलब्ध रहते हैं, चिन्तायें तथा त्रिविधि क्लेष जिन्हें पीड़ित नहीं करते हैं वे महानुभाव ही स्वर्ग (सुख का उपयोग करने में समर्थ होते है और वह सुख जहां जीवन में प्राप्त हो सकता है उसे ही स्वर्गस्थल व स्वर्गलोक कहा जाता है। स्वर्ग कोई लोक विशेष आकाश में नहीं है। जीवों का कर्मस्थल पृथ्वी है वहीं उनके कर्मफलों के भोग की भी व्यवस्था होती है। वहीं उन्हें सुख (स्वर्ग) व दुःख (नरक) की स्थिति में से गुजरने के अवसर आते हैं। अतः वैदिक अर्थों में स्वर्ग मानव जीवन में ही प्राप्त होता है न कि मरणोपरान्त जीव कहीं स्थान विशेष पर स्वर्ग में जाता है जैसा कि गीता व पुराणादि ग्रन्थ अथवा इस्लाम ईसाई मत व जैनी आदि मानते हैं स्वर्ग के देवी देवताओं की व उनके कार्यों, आशीर्वादों, वरदानों अभिशापों की सारी कहानियां कल्पित होती है।

खण्डन मण्डन ग्रन्थमाला के ग्रन्थों को सूची :-

कुरान की छानवीन	५)५०,६)५०	तुलसी और शालग्राम	)५०
भागवत समीक्षा	५)	चोटी २० पैसे, जनेऊ ५० पैसे	
गीता विवेचन	६)	कुरान की विचारणीय बातें	)६०
बाइबिल दर्पण	४)	पुराणों के कृष्ण	१)
कुरान पर १७६ प्रश्न	३)	शिवजी के ४ विलक्षण बेटे	)८०
कुरान दर्पण	५)	मृतक श्राद्ध खण्डन	)७५
ईश्वर सिद्धि	४)५०	विभिन्न मतों में ईश्वर	)६५
वैदिक यज्ञ विज्ञान	३)	गीता पर ४२ प्रश्न	)६५
जैन मत समीक्षा	३)५०	शास्त्रार्थ के चैलेंज का उत्तर	)३५
मुनि समाज मुख मर्दन	२)५०	पौराणिक कीर्तन पाखण्ड है	)७५
अवतार रहस्य	३)२५	बाइबिलपर सप्रमाण ३१प्रश्न	)३५
मूर्ति पूजा खण्डन	३)५०	अर्थ सहित वैदिक संध्या	)७०
टोंक का शास्त्रार्थ	२)५०	सनातनधर्ममेंनियोगव्यवस्था०	)७०
माता पुत्री का सम्बाद	२)२५	नारी पर मजहबी अत्याचार	)५०
भारतीय शिष्टाचार	१)५०	हंसामत का पोलखाता	)५०
शिवलिंग पूजा क्यों ?	३)५०	पौराणिक मुख चपेटिका	)५०
अद्वैतवाद मीमाँसा	२)	दुर्गा पर नरबलि	)५०
प्रार्थना भजन भाष्कर	२)२५	स्वर्ग विवेचन	)५५
यजुर्वेद अ० ४० सव्याख्या	१)५०	हनुमान जी बन्दर नहीं थे	)५[illegible]
यजुर्वेद अ० ३१ सव्याख्या	१)	कुरान खुदाई किताब नहीं है	)२[illegible]
वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है	१)५०	शैतान की कहानी	)५०
पुराण किसने बनाये ?	२)	खुदा का रोजनामचा	)२०
माधवाचार्यको डबल उत्तर	२)२५	नरसिंह अवतार वध	)२०
पौराणिक गप्प दीपिका	१)२०	संसारकेपौराणिकसे ३१प्रश्न	)२०
इस्लाम दर्शन	१)	असत्य पर सत्य की विजय	३)५०
कबीर मत गर्व मर्दन	२)	अवतारवाद पर ३१ प्रश्न	)२०
ब्रह्माकुमारी मत खण्डन	१)	ईसा मुक्तिदाता नहीं था	)२०
मौलवी मुख मर्दन		मरियम और ईसा	)२०
स०प्र० की छीछालेदड़का	३०)७०	मूर्ति पूजा पर ३१ प्रश्न	)२०
महान पुरुष कैसे बनते हैं	१)५०	ईसाई मत का पोलखाता	)२०
सव्याख्या विवाह पद्धति	२)५०	मृतक श्राद्ध पर २१ प्रश्न	)१०
अण्डा और मांस में विष	)२०	तम्बाक में विष	)२०

ओ३म्

कुरान में परस्पर विरोधी स्थल

(खुदाई किताब कुरान में अनेक परस्पर विरोधी स्थलों का होना अल्लाह मियां व कुरान के लिये गौरव की बात है अथवा दोष की, पाठक विचार करें। विचारार्थ चन्द ऐसे प्रमाण कुरान से प्रस्तुत हैं।)

डा० श्रीराम आ[illegible]
कासगंज (एटा) उ० प्र०

दूसरीवार] सन् १९८२ [मूल्य २० पै.

कुरान के परस्पर बिरोधी चन्द स्थल

(१) पक्ष—"नेकी और बदी बराबर नहीं। बुराई का बदला अच्छे बर्ताव से दें" ।३४। कु.सूरे हामीम सज्दह ॥

विरोध—ऐ ईमान वालो ! जो लोग मारे जावें उनमें तुमको जान के बदले जान का हुक्म दिया जाता है, आजाद के बदले आजाद-गुलाम के बदले गुलाम, औरत के बदले औरत का।" कु.सु बकर रुक आ. १७८

"जो मनुष्य अल्लाह का दुश्मन हो और उसके फरिश्तों का और उसके रसूलों का और जिब्रील का और मीकाएल का तो अल्लाह भी ऐसे काफिरों का दुश्मन है॥" कु.सू. रेवकर रुकू १२ आ० ९८ ॥

"और हमने इनके आपस में दुश्मनी और ईर्षा कयामत तक डालदी है ...।" कु.सूरे मायदा ६४ ॥

"अल्लाह काफिरों को नसीहत नहीं दिया करता।' कु.सू.वकर आ. २६४।

'अगर सख्ती भी करो तो वैसी ही करो जैसी तुम्हारे साथ की गई हो।" सू०नहल १२६।

"मुसलमानो अपने आस पास के काफिरो से लड़ों और चाहिए कि वह तुमसे सख्ती मालूम करें।" कु.सूरे तौबा आ १२४। (२) पक्ष—"वही (खुदा) आदि है, वहीं अन्त है, वही प्रत्यक्ष और गुप्त हैं और वह हर चीज से जानकार है।" कु.सूरे हदीद आ. ३।

"तुमको मालूम रहे कि जो कुछ आसमानों और जो कुछ जमीन में है अल्लाह जानता है और अल्लाह हर चीज से जानकार है।" ९७ कु.सूरे मायदा रु १३ ॥

विरोध—"उस दिन (खुदा) दोजख से पूंछेंगे कि क्या तू भर चुकी और वह कहेगी क्या कुछ और भी है।" कु.सूरे काफ आ. २९।

"उसी ने जमीन और आसमान दोनों से कहा कि तुम दोनों खुशो से आये या लाचारी से ? दोनों ने कहा हम खुशी से आये। कु०हामीम सज्दह ११।

(३) पक्ष—फिर जब नर सिंहा फूंका जायेगा तो उस दिन लोगों में रिश्तेदारियां (बाकी) न रहेगी और न एक दूसरे को बात पूंछेंगे।

विरोध—(बहिश्त में) हमेशा रहने को बाग हैं जिनमें वे जायेंगे और उनके बड़ों और उनकी बीबियों और उनके बच्चे औलाद जो भला काम करने वाले होंगे और उनके साथ जायेंगे। २३। कु.सू.राद २३।

प्रश्न—यदि मुसलमानों के बीबी बच्चे उनके साथ बहिश्त में जायेंगे तो काफिरों के भी बीबो बच्चे दोजख में उनके साथ जायेंगे। रिश्तेदारियां तो फिर भी कायम रहेंगी। इससे कुरान का दावा तो गलत हो गया।

(४) पक्ष—"तुम्हारा परवर्दिगार बड़ा माफी करने वाला मेहरबान है। अगर उनके काम के बदले में इनको पकड़ना चाहता तो फौरन ही इन पर सजा उतार देता लेकिन इनके लिए एक म्याद है जिससे इधर-उधर कहीं शरण नहीं पा सकते। कु.सूरे कहफ आ. ४८।

"खुदा का हर वायदा लिखा हुआ है।" कु.सूरे रादआ. ३८।

विरोध—कोइ शख्स बे हुक्म खुदा मर नहीं सकता। जिंदगी लिखी हुई है और जो शख्स दुनियां में बदला चाहता है हम उसका बदला यहीं देते हैं और जो कयामत में बदला चाहता है मैं उसको वही दूंगा। और जो… लोग शक करते हैं, मैं उनको जल्द बदला दूंगा। कु.सूरे आल इमरान आ. १४६।

(इसमें खुदा की मर्जी पर नहीं वरन लोगों की मर्जी पर निर्भर है कि वे कर्मफल कब और कहां चाहते हैं। प्रथम आयत

से विरोध स्पष्ट है।)

(५) पक्ष—"खुदा फिसाद नहीं चाहता।" कु.सूरे वकर आ. २०५।

विरोध-(खुदा ने कहा) हमने हर बस्तीमें बड़े-बड़े अपराधी पैदा किये ताकि वहाँ फिसाद करते रहें।" कु.सूरे अनआम आ. १२३।

(६) पक्ष—(खुदा ने कहा) मेरे यहाँ बात नहीं बदली जाती और मैं बन्दों पर जुल्म नहीं करता" कु. सूकाफ आ. २८।

विरोध—हम कोई आयत मंसूख करदें या बुद्धि से उतार दें तो उससे अच्छी या वैसी ही पहुँचा देते हैं। कु.सूरेवकर आ.१०६।

"जब हम एक आयत को बदल कर उसकी जगह दूसरी आयत उतारते हैं तो जो हुक्म उतरता है उसको वही बखूबी जानता है।" कु. सू नहल आ. १०१।

(७) ऐ पैगम्बर! मुसलमानों को लड़ने पर उत्तेजित करो कि यदि तुम में से जमे रहने वाले बीस भी होंगे तो दो सौ पर ज्यादा ताकतवर बैठेंगे, और अगर तुम में से सौ होंगे तो हजार काफिरों पर ज्यादा ताकतवर बैठेंगे, क्योंकि यह ऐसे लोग हैं जो समझते ही नहीं। ६५।। कु.सू. अनफाल।

विरोध—"और अब खुदा ने तुम पर से अपने हुक्म का बोझ हलका कर दिया और उसने देखा कि तुममें कमजोरी है, तो अगर तुममें से जमे रहने वाले सौ होंगे तो खुदा के हुक्म से वह दो सौ पर ज्यादा ताकतवर रहेंगे और अगर तुममें से हजार होंगे खुदा के हुक्म से दो हजार पर ज्यादा ताकतवर बैठेंगे। अल्लाह उन लोगों का साथी है जो जमे रहते हैं।" कु.सू. अनफाल आ. ६६॥

(८) पक्ष—"ईमान वालों से कहो कि अपनी आँख नीची रखें और अपनी शर्मगाहों को बुरे कामों से बचाये रहें। इसमें

उनकी ज्यादा सफाई है ....।" क. सूरे नूर आ. ३०

"जिन लोगों का विवाह नहीं हुआ वे अपने को थामे रहें। कु. सूरे नूर आ. ३३।

विरोध—और तुम्हारी लोंडियां जो पाक रहना चाहती है उनको दुनियां की जिन्दगी के फायदे की गरज से हरामकारी पर मजबूर न करो। और जो मजबूर करेगा तो अल्लाह उनको मजबूर किये पीछे क्षमा करने वाला मेहरबान है। सू. नूर ३३॥

"जो औरतें कैद होकर तुम्हारे हाथ लगी हो उनके लिए तुमको खुदा का हुक्म है और इनके अलावा दूसरी सब औरतें हलाल हैं।" सू. निसा. आ. २४।

"बीबियों और बांदियों से (जिना करने पर) इल्जाम नहीं।" कु. सू. मोमिनून आ. ६।

(६) "पक्ष—और खजूर और अंगूर के फलों से तुम शराब अच्छी रोजी बनाते हो। जो बुद्धि रखते हैं उनके लिये और इन चीजों में निशान हैं। कु.सूरे नहल आ० ६७।

विरोध—"मुसलमानों। शराब, जुआ-बुत और पांसे गन्दे काम हैं। उनसे बचो, शायद इस से तुम्हारा भला हो।" क.सू. मायदा आ. ९०।

(१०) पक्ष—अल्लाह को पसन्द नहीं कि कोई मुँह फोड़कर बुरा कहे, गाली दे। मगर जिस पर जुल्म हुआ हो और अल्लाह सुनता और जानता है।१४८। क.सू. निसा।

विरोध—ऐ पैगम्बर! किताब वाले और जाहिलों से कहो कि तुम भी इस्लाम को मानते हो (या नहीं)। कु. सू. आल-इमरान आ. २०।

(११) पक्ष—यह वह वक्त था जब तुम अपने परवर्दिगार के आगे विनती करते थे जो उसने तुम्हारी सुन ली कि हम लगातार हजार फरिश्तों से तुम्हारी सहायता करेंगे।९। यह वह वक्त था कि तुम्हारा परवर्दिगार फरिश्तों को आज्ञा दे रहा था कि हम तुम्हारे साथ हैं, तुम मुसलमानों को जमाये रखो, हम

जल्द काफिरों के दिलों मे डर डाल दगे। बस तुम इनकी गरदन मारो और इनके टुकड़े कर ड़ालो। १२। कु. सू. अनकाल।

विरोध—मक्का वाले कहते हैं कि ऐ शख्स (मुहम्मद) तुझ पर कुरान उतरा है, तू पागल है। अगर तू सच्चा है तो फरिश्ता को हमारे सामने क्यो नहीं बुलाता है, सो हम फरिश्तो को नहीं उतारा करते हैं ...।(६-८)। कु.सू हिज।

(१२) पक्ष—और अगर वह जो (कुरान) हमने अपने बन्दे पर उतारा है अगर तुझको इसमे शक हो तो तुम उसके समान एक सूरत बना लाओ और सच्चे हो तो अल्लाह क सिवाय अपने हिमायतीयों को बुला लो।" कु. सू. बकर आ. २३।

विरोध—ऐ पैगम्बर ! क्या काफिर कहते हैं कि इसने कुरान को अपने दिल स बना लिया है तो इनसे कह दो कि अगर तुम सच्चे हो तो तुम भी इसी तरह की बनाइ हुई दस सूरत ले आओ और खुदा क सिवाय जिसको तुमसे बुलाते बन पडे, बुला लो, अगर तुम सच्चे हो।" १३॥ सू. हूद।

(३) पक्ष—"और हमन आसमानों को अपन बाहुबल से बनाया और हम सामथ वाले हैं। कु. स. जारियात। ४७। "तुम्हारा परवर्दिगार वही अल्लाह है जिसन छः दिन में जमीन और आसमान को पदा किया फिर (अपन) तख्त पर जा बठा।" कु. सू. आराफ आ. ५४।

(इसम जमीन व आसमान का खुदा द्वारा पैदा किया जाना बताया है अथात वे पहिल स न थे)

विरोध—खुदा ने जमीन और आसमान दोनो स कहा (पूछा) कि तुम दोनो खुशी स आये या लाचारी से ? दोनो ने कहा कि हम खुशी से आये। ११। सू. हामीम सज्दह।

(इससे स्पष्ट है कि दोनो पहिल स मौजूद थे और खुदा के बुलाने पर चले आये। खुदा ने उनको बनाया नही था। परस्पर विरोध स्पष्ट है।

(१४) पक्ष—"लोगो ! तुम्हारा एक खुदा है, सो जो लोग

पिछली जिन्दगी का विश्वास नहीं करते उनके दिल इन्कारी हैं और वे घमण्डी हैं।" कु. सू. नहल आ. २२।

(इसमें मौजूदा जीवन से पूव और जिन्दगी का उल्लेख है)

विरोध—(लोगों को समझाओ कि तुम मुल्क में चलो फिरो और देखो कि खुदा ने तुमको किस तरह पहिली मर्तबा पैदा किया। फिर खुदा आखिरी बार भी (कयामत के दिन) उठावेगा। कु. सू. अनकबूत आ. २०।

(इससे मनुष्यों के प्रथम बार ही वर्तमान जीवन में पैदा होने की बात कही है।)

(१५) पक्ष—जब हम किसी चीज को चाहते हैं तो हमारा कहना उसके बारे में सिर्फ इतना ही होता है कि हम फर्मा देते हैं कि 'हो' और वह हो जाता है।" कु. सू. नहल आ. ४०।

विरोध—"खुदा ने जमीन आसमान और जो कुछ उनके बीच में है सभी को आठ दिन में पैदा किया। (कु. सू. हामीम सजदह आ. ९ से १२ तक का भावार्थ)

"वही है जिसने आसमान और जमीन को छः दिन में बनाया और उसका तख्त पानी पर था ताकि तुम लोगों को जांचे कि तुम में किसके कर्म अच्छे हैं....।" (कु. सू. हूद आ.७)

(१६) पक्ष यह किताब कुरान इस किस्म का नहीं कि खुदा के सिवाय और कोई इसे अपनी तरफ से बना लावे। कु. सू. यूनिस आ ३७।

विरोध "खुदा के सिवाय किसी की पूजा मत करो, मैं उसी की ओर से तुमको डराता हूँ।" कु. सू. हूद आ. २।

"खुदा इनको गारत करे, किधर को भटके चले जा रहे हैं।" कु.सू. तौबा आ. ३०।

'खुदा की कसम, तुमसे पहिले हमने बहुत सी उम्मतों की तरफ पैगम्बर भेजे। सू. हल ६३न।

(इनमे खुदा की ओर से डराने वाला, खुदा से गारत करने की प्रार्थना करने वाला, पैगम्बर भेजने वाला व्यक्ति कुरान का लेखक खुदा से प्रथक अन्य है, यह स्पष्ट है।)

(१७) पक्ष—"फिर हम जिन्नों और आदम के बेटों (आदमियों) दोनों से मुखातिब होकर पूछेंगे कि तुम्हारे पास तुम्हीं मे के पैगम्बर नहीं आये कि तुमसे हमारा हुक्म बयान करे और इस रोज (कयामत) के आने से डरावें। कु. सू अनआन रुकू १६ आ. १२०।

"फिर उस दिन (कयामत के दिन) नियामतों के विषय में तुमसे पूछताछ अवश्य होगी।" कु. सू. तकासुर आ. ८।

विरोध—"उस दिन आदमियों और जिन्नों से पूँछताछ उनके गुनाहों के बार में नहीं होगी" कु. सू. रहमान ३६।

(१८) पक्ष—"खुदा काफिरों को उपदेश नहीं दिया करता।" कु. सू. तोबा आ. ३७।

विरोध—"काफिरों ने अपने पैगम्बरों से कहा कि हम तुमको अपने देश से निकाल देंगे फिर तुम हमारे मजहब में आ जाओ।" १३। कु. सू. इब्राहीम।

(१६) पक्ष—(खुदा ने कहा) खुदा के सिवाय किसी की पूजा मत करो, मैं उसकी ओर से तुमको डराता और खुश-खबरी सुनाता हूँ।" (कु.सू. हूद आ० २)

विरोध—(खुदा ने कहा) और हमने फरिश्तों से कहा कि आदम के आगे सिजदा (दण्डवत प्रणाम) करो तो सबने सिजदा किया मगर इब्लीस (शैतान) ने नहीं किया।" (कु सू. ताहा आ० ११६)

ॐ विनम्र निवेदन ॐ

प्रस्तुत पुस्तिका भारत के प्रधान मन्त्री महामान्य श्री पं० जवाहरलाल श्री नेहरू की 'विश्व इतिहास की झलक' नामक ग्रन्थ के आधार पर है। इस ग्रन्थ में माननीय श्री नेहरू जी ने विश्व की जहां अनेक समस्याओं पर विवेचन किया है वहां ईसाई धर्म के अनुयायियों ने जो कुछ विश्व में किया है उसकी भी कहीं २ झलक दी है। मैंने केवल उनमें से ही कुछेक उद्धरण इस पुस्तिका में दिये हैं अपनी ओर से कुछ भी नहीं।

इसी महत्वपूर्ण ग्रन्थ के आधार पर दो पुस्तकें—नेहरू जी की आर्य विचारधारा और भारत मां की अश्रुधारा प्रकाशित की थी जिन्हें जनता ने इतना पसन्द किया कि हजारों प्रतियां हाथों-हाथ प्रचरित हो गईं।

आज भारत के कोने-कोने में विदेशी मिशनों और चर्चों के ईसाई पादरियों द्वारा शान्ति और सेवा के चोले में एक भयंकर राजनैतिक जाल बिछाकर उसमें अपने राष्ट्र के भोले-भाले, अपढ़, निर्धन और निस्सहाय भाइयों को फंसाया जा रहा है। आश्चर्य तो तब होता है—जब हमारे ही देश के कुछ कर्णधार इन विदेशी भेड़ियों की कुचालों से आंखें मूंद कर उनकी प्रशंसा करते रहते हैं।

आज भारत में बड़ी तेजी से यह प्रचार किया जा रहा है कि भारतीय धर्म और महापुरुषों में मानव की सेवा के भाव नहीं थे वह भाव तो ईसाइयों में ही हैं और इसी प्रचार में अरबों रुपया बहाया जा रहा है।

प्रस्तुत पुस्तिका में ईसाइयों के सम्बन्ध में जो कतिपय उद्धरण दिये हैं उनसे सिद्ध होता हैं कि ईसाई मत के मानने वालों ने ईसाइयत के नाम पर विश्व में जो भयंकर खूनी होली खेली है उसकी मिसाल संसार में कहीं मिले-तो-मिले किन्तु मेरा दावा है कि मेरे देश के धार्मिक इतिहास में इस प्रकार की एक भी ऐसी खूनी घटना नहीं मिलेगी जिसका आधार धार्मिक मतभेद रहा हो।

मुझे विश्वास है कि इस पुस्तिका से जहां मेरे देश के विचारकों और कर्णधारों की आंखें खुलेंगी वहां शान्ति और सेवा का चोला पहन कर आते हुए विदेशी पादरियों को भी अपने पूर्वजों-पोपों और अनुयायियों के कुकृत्यों पर सोचने को विवश होना पड़ेगा। यदि यत्किंचित भी ऐसा हुआ तो अपने राष्ट्र का और विश्व का हित होगा।

चतुरसेन गुप्त

॥ ओ३म् ॥

ईसाइयों के खूनी कारनामे
श्री नेहरू जी की नजरों में

मत भेद में बहुत मारे गये

"ईसा के सिद्धान्तों और उसूलों को समझने और उनपर अमल करने के बजाय, ईसाई लोग, ईसा के देवत्व और त्रिमूर्ति (ट्रिनिटी) के सम्बन्ध में आपस में बहस-मुबाहिसा करने लगे और झगड़ने लगे। वे एक दूसरे को काफ़िर-नास्तिक कहते, एक दूसरे पर अत्याचार करते और एक दूसरे का गला काटने लगे। एक वक्त ईसाइयों के मुख्तलिफ़ सम्प्रदायों में एक संयुक्त शब्दके ऊपर बहुत ज़ोरदार और जबरदस्त झगड़ा शुरू हुआ। एक दल कहता था कि प्रार्थना में होमो आउज़न (Homo-Ousion) शब्द इस्तेमाल किया जाय, दूसरा होमोई आउज़न (Homoi-Ousion) कहलाना चाहता था। इस मत-भेद का ईसा के देवत्व से सम्बन्ध था। इस संयुक्त शब्द के पीछे बहुत भयंकर लड़ाई हुई और बहुत-से आदमी मारे गये।"

१२ अप्रैल १९३२ पृ० १३०

लाखों स्त्रियां जिन्दा जला दी

"कैथोलिकों और प्रोटेस्टेएटों की सख्त मजहबी लड़ाई, कैथलिक और कालविन के अनुयायियों-दोनों की असहिष्णुता, और इनक्विज़िशन, ये सब इस कट्टर मजहबी और जातिगत दृष्टिकोण के ही नतीजे थे। जरा इसका विचार तो करो? कहा जाता है कि योरप में प्यूरिटनों ने लाखों स्त्रियों को जादूगरनी बतलाकर जिन्दा जला डाला।"

१० सितम्बर १९३२ पृ० ४७७

औरतों की एक बड़ी तादाद जिन्दा जला दी

"इंग्लैंड योरप की खौफ़नाक मजहबी लड़ाईयों से बचा रहा। मजहबी झगड़ों, दंगे-फ़िसादों और कट्टरपन की बहुत ज्यादती रही, और औरतों की एक बड़ी तादाद जिन्दा जला दी गई, क्योंकि उन्हें जादूगरनियां समझा गया था।" पृ० ४२१

जर्मन दार्शनिक को देश निकाला

"योरप में सहिष्णुता और बुद्धिवाद का यह विकास बहुत धीरे-धीरे हुआ। शुरू-शुरू में इसे पुस्तकों से ज्यादा मदद नहीं मिली क्योंकि लोग ईसाई धर्म की खुल्लम-खुल्ला आलोचना करने से डरते थे। ऐसा करने का नतीजा था क़ैद या और कोई सजा।

एक जर्मन दार्शनिक को प्रशिया से इस लिए निकाल दिया गया कि उसने कनफ्यूशियस की बहुत ज्यादा तारीफ़ कर दी थी। यह ईसाई धर्म पर आक्षेप समझा गया।" पृ० ४७६

वाल्टेयर को जेल

"मशहूर लेखक वाल्टेयर नाम का एक फ्रांसीसी था जिसको कैद करके देश से निकाल दिया गया और जो आखिरकार जिनेवा के पास फ़र्नी में जाकर रहा। जेल में उसे कागज और कलम-दवात नहीं दिए गए। इसलिए उसने किताबों की लाइनों के बीच-बीच में शीशे के टुकड़ों से कवितायें लिखीं।

चूंकि वह ईसाई-धर्म की आलोचना करता था इसलिए कट्टर ईसाई लोग उससे सख्त नफरत करते थे। अपनी एक किताब में उसने लिखा है कि "जो आदमी बिना जांच-पड़ताल किए किसी धर्म को इख्तियार कर लेता है, वह उस बैल के समान है जो अपने कन्धों पर जुआ रखवा लेता है।" पृ० ४७६

'खूनी मजलिस' के खूनी कारनामे

"फिलिप (निदरलैण्ड का राजा) ने शहरों के अधिकारियों को और नए मत को कुचल डालना चाहा। उसने एल्वा के ड्यूक को गवर्नर-जनरल बनाकर भेजा, जो अपनी बेरहमी और जुल्म के लिए मशहूर हो गया है। "इनक्विज़िशन" कायम हुआ और एक 'खूनी मजलिस' बनाई गई जिसने हजारों को जिन्दा जला दिया या फांसी पर लटका दिया। (पृ० ४१५)

तीस लाख आदमी मौत के मुंह में

"१५६८ ई० "इनक्विजिशन" ने, कुछ थोड़ेसे आदमियों के सिवा निदरलैंड के सारे निवासियों को काफ़िर करार देकर मौत की सजा दे दी। यह एक अजीब और इतिहास में लासानी फैसला था, जिसने तीन-चार लाईनों में ही तीस लाख आदमियों को इतना बड़ा दण्ड दे दिया।" (पृ० ४१६)

खौफनाक और खूँखार घटना

फ़िलिप (नीदरलैण्ड) के लिए माननीय नेहरू जी लिखते हैं:-

"उसे अगर परवा थी तो ऐसे धर्म की जो बड़ा ही कट्टर और बेरहम था। सारे देश में "इनक्विजिशन" की तूती बोलती थी और काफिर कहे जाने वालों को दिल दहलाने वाली तकलीफें दी जाती थी। समय-समय पर बड़े आम जलसे किए जाते थे और इन "काफिर" स्त्री-पुरुषों के झुण्ड के झुण्ड बादशाह, शाही खानदान, राजदूतों और हजारों मनुष्यों के सामने बड़ी-बड़ी चिताओं पर जिन्दा जला दिए जाते थे। सबके सामने जिन्दा जलाने के काम को धार्मिक कार्य कहा जाता था। इस तरह की बातें आज कितनी खौफनाक और खूंखार मालूम पड़ती है। पर इस

जमाने का योरुप का इतिहास हिंसा, खूंख्वारी, वहशियाना बेरहमी, और मजहबी कठमुल्लेपन से इस कदर भरा हुआ है कि उस पर यकीन करना मुश्किल है ।" (पृ० ४१२)

कालविन की क्रूरता

"कालविन प्रोटेस्टेएट आन्दोलन के बाद के नेताओं में से एक था । ......क्या तुम्हें जेनेवा के पार्क में बना हुआ "रिफार्मेशन" का वह बड़ा स्मारक याद है, जिसकी दीवारें दूर-दूर तक फैली हैं और जिसमें कालविन और दूसरे लोगों की मूर्तियां हैं ? कालविन इतना असहिष्णु था कि उसने बहुत से लोगों को सिर्फ इसलिये जलवा दिया था कि वे उससे सहमत नहीं होते थे और "फ्री थिंकर्स" यानी स्वतन्त्र, विचारक थे ।" (पृ० ४०४)

"मजहबी मामलों में कालविन भयंकर रूप से असहिष्णु था । नास्तिकों पर तरह-तरह के जुल्म किये जाते और उनको जला दिया जाता था ।" (पृ० ४०६)

महान् सुधारक लूथर की भी सुनो

"और उस महान् सुधारक लूथर का क्या रुख था ? क्या उसने गरीब किसानों का साथ दिया और उनकी न्यायोचित मांगों का समर्थन किया ? उसने यह सब कुछ नहीं किया, बल्कि किसानों की मांग पर कि असामी या दास प्रथा तोड़ दी जाय उसने कहा—"इससे तो सब आदमी बराबर हो जायेंगे और ईसा का आध्यात्मिक राज्य एक ऊपरी दुनियावी राज्य में तब्दील हो जायगा । असम्भव ! पृथ्वी पर कोई राज्य लोगों की असमता के बगैर टिक नहीं सकता । कुछ को आजाद, दूसरों को गुलाम: कुछ को शासक, दूसरों को रिआया रहना ही पड़ेगा ।" उसने

किसानों को श्राप दिया और बरबाद कर देने का हुक्म दिया। "इसलिए जो लोग भी काबिल हों, उनको (किसानों को) पामाल कर दो, उनको सब के सामने खुल्लमखुल्ला या गुप्त रूप से कत्ल करो या छुरा भौंक दो और याद रखो कि एक बागी से बढ़ कर जहरीला, घृणित और पिशाच कोई नहीं है। तुम उसे जरूर मार डालो, जैसे तुम पागल कुत्ते को मार डालते हो। अगर तुम उस पर टूट नहीं पड़ोगे तो वह तुम्हारे और सारे देश पर टूट पड़ेगा।"

एक मजहबी नेता और सुधारक के मुंह से निकलने वाले ये कैसे सुन्दर शब्द हैं। (पृ० ४०५)

जिन्दा जलवा दिया

"जोर्डानो ब्रूनो नाम के इटैलियन को १६०० ई० में रोम में चर्च ने इसलिये जिन्दा जलवा दिया कि वह इस बात पर जोर देता था कि दुनियां सूरज के चारों तरफ घूमती है और सितारे खुद भी सूरज हैं।" (पृ० ३६८)

गैलीलियो को जेल

"इसके जमाने में गैलीलियो भी हुआ जिसने दूरबीन ईजाद की थी। उसे भी चर्च ने धमकी दी लेकिन वह ब्रूनों की तरह बहादुर नहीं था और उसने अपनी बात वापिस ले लेनी ज्यादा मुनासिब समझा। उसने पादरियों की मण्डली के सामने अपनी गलती और बेवकूफी मान ली और कह दिया कि पृथ्वी ही विश्व का केन्द्र है और सूरज उसके चारों तरफ घूमता है। फिर भी उसे प्रायश्चित्त करने के लिये कुछ दिनों तक जेल में रहना पड़ा था।" (पृ० ३६८)

जमीन इन्सान के खून से रंग गई

"...ईसाई जिहादियों के दल के दल युद्ध करने के लिये और ज्यादातर उस 'पवित्र' देश में मरने के लिए जाते रहे। इन लम्बी लड़ाइयों से ईसाई जिहादियों को कोई खास फायदा नहीं पहुंचा। कुछ समय के लिए जेरुसलम ईसाई जिहादियों के हाथ में चला गया था। लेकिन बाद में फिर वह तुर्कों के हाथ में आ गया और उन्हीं के अधिकार में बना रहा। इस धार्मिक युद्ध का एक खास नतीजा यह हुआ कि लाखों ईसाइयों और मुसलमानों को मुसीबतें झेलनी पड़ीं और मौत के घाट उतरना पड़ा। एशिया और फिलस्तीन की जमीन इन्सान के खून से रंग गई।" (पृ० २७७)

घोड़ों की लगाम तक खून

('क्रूसेड' अर्थात् ईसाइयों के "धर्म युद्ध")

"आखिर में... ...क्रूसेड़ की सेना फिलस्तीन पहुंची। इसने जेरुसलम को जीत लिया। इसके बाद एक हफ्ते तक मारकाट मची रही। हजारों लोग कत्ल कर दिये गये। इस घटना को अपनी आंखों से देखने वाले एक फ्रांसीसी ने लिखा है—

'मसजिद की बरसाती के नीचे घुटने तक खून था और घोड़े की लगाम तक पहुंच जाता था।"

......."क्रूसेड़ों की कहानी बेरहमी, नीचता, छल-कपट, भयंकर अपराधों और निर्दयता पूर्ण लड़ाइयों से भरी हुई है।"

(पृ० २७६)

जान हस को जिन्दा जला दिया

"जान हस......जो बाद में प्रेग विश्वविद्यालय का प्रमुख हुआ। पोप ने जान हस को उसके ख्यालात की वजह से समाज से निकाल दिया लेकिन इससे उसके शहर में उसका कुछ नहीं

बिगड़ा, क्योंकि वहां वह बहुत लोकप्रिय था। इसलिये एक चाल चली गई। उसे कांस्टैंस, जो स्वीटजरलैंड में है और जहां चर्च कौंसिल की बैठक हो रही थी, बुलाया गया और सम्राट ने वादा किया कि हिफाजत से वहां पहुंचा दिया जायगा। जाल इस गया। उससे कहा गया कि तुम अपनी गलती मान लो लेकिन उसने जवाब दिया कि जब तक मैं समझ न लूं अपनी गलती नहीं मान सकता। इस पर हिफाजत के वादे के बावजूद उन्होंने उसे जिन्दा जला दिया। यह १४१५ ई० की बात है।"

(पृ० ३३०)

हड्डियां खोद कर निकाली और जला दी

"चर्च पर वाईक्लिफ नाम के एक अंग्रेज ने खुले आम आक्षेप करना शुरु कर दिया। वह पादरी था और आक्सफोर्ड में प्रोफेसर था। बाइबिल का अंग्रेजी में पहली मर्तबा तर्जुमा करने के लिये वह मशहूर है। अपनी जिन्दगी में तो वह रोम के पोप के कोप से किसी तरह बच गया। लेकिन १४१५ ई० में, मरने के ३१ वर्ष बाद; चर्च कौंसिल ने हुक्म दिया कि उसकी हड्डियां खोद कर निकाली और जला दी जायें। इस हुक्म की पाबन्दी की गई।"

(पृ० ३२६)

मजहबी करतूतें

"मजहब की करतूतें बड़ी खराब रही हैं पर इस अमानुषिक बेरहमी में "इनक्विज़िशन"- यानी इस मजहबी अदालत का मुकाबिला करने वाली कोई दूसरी चीज दुनियां में नहीं हुई।"

(पृ० ३२८)

जिन्दा जला दिये जाते थे

"मजहब में चर्च ने हिंसा और जब्र का राज्य बाकायदा और

सरकारी तौर पर १२३३ में 'इन्क्विजिशन' को जारी करके शुरू किया। 'इन्क्विजिशन' एक किसम की अदालत होती थी जो लोगों के धार्मिक सिद्धान्तों पर विचार करती थी। अगर इस अदालत की राय में लोग चर्च के धार्मिक सिद्धान्तों में पक्के साबित नहीं होते थे तो उनकी मामूली सजा यह थी कि वे जिन्दा जला दिये जाते थे।"
(पृ० ३२८)

सबसे ज्यादा घातक

"इस (रोमन) साम्राज्य पर रूसी, बलगेरियन, अरब, या सेलजूक के हमले भी हुये, लेकिन ईसाई जिहादियों का हमला सबसे ज्यादा घातक और नुकसान देह साबित हुआ। इन ईसाई वीरों ने ईसाई कुस्तुन्तुनिया को जितना नुकसान पहुंचाया, उतना किसी विधर्मी ने नहीं पहुंचाया। इस आफत के बुरे असर से साम्राज्य और कुस्तुन्तुनियां का शहर फिर कभी नहीं निकल या पनप सका।"
(पृ० २८६)

नहाना धोना भी जुर्म

ईसाई तो यहां तक बढ़ गये, कि उन्होंने 'मूरों या अरबों के सुधार के लिये हिदायतें निकालीं कि "न अरब के पुरुष, न उनकी स्त्रियां और, न दूसरा ही कोई, घर में या और कहीं नहाने-धोने पावें और उनके सब स्नानागार गिरा कर नष्ट कर दिए जायं।"
(पृ० २७५)

बच्चों तक को नहीं छोड़ा

"इसी समय स्पेन में "इनक्विजिशन" का भीषण हथियार रोमन चर्च ने बनाया। यह वह भयंकर शस्त्र था जिससे रोमन चर्च उन तमाम आदमियों को कुचल देता था जो उसके सामने

झुकने से इन्कार करते थे। यहूदी, जो सरासीनों की मातहती में खुशहाल थे, अपना धर्म बदलने के लिये मजबूर किये जाने लगे और बहुत से यहूदी जिन्दा जला दिये गये। स्त्री और बच्चों तक को नहीं छोड़ा गया।" (पृ० २७४)

शहर जला दिया

"क्रूसेडों का एक जत्था कुस्तुन्तुनिया भी पहुंचा और उसने उस पर कब्जा कर लिया। इस सेना ने पूर्वी यूनानी साम्राज्य के यूनानी सम्राट को भगा दिया और वहां एक लैटिन राज्य और रोमन कैथलिक चर्च की स्थापना की। इन लोगों ने कुस्तुन्तुनियां में भी भयंकर मारकाट की और शहर का एक हिस्सा जला भी दिया।"

(पृ० २८०)

एक बहादुर औरत को फांसी

"तुम जीन द आर्क या जोन आफ़ आर्क जिसे 'मेड आफ़ आर्लियन्स' की कुमारी भी कहते थे, के बारे में थोड़ा-बहुत जानती ही हो। वह एक बहादुर औरत या ऐसी नायिका है जिसे तुम पसंद करती हो। उसने अपने पस्तहिम्मत देशवासियों के दिल में विश्वास पैदा किया और बड़े-बड़े कारनामे करने के लिए उनको उत्साहित किया। उनके नेतृत्व में फ्रांसिसियों ने अंग्रेजों को अपने देश से निकाल भगाया। लेकिन इसका बदला उसे यह मिला कि 'इनक्विजिशन' के सामने उसका मुकदमा हुआ। अंग्रेजों ने पकड़ कर चर्च से उसे फांसी की सजा दिला दी और राउन के बाजार में १४३० ई० में इन लोगों ने उसे जिन्दा जला दिया।

बहुत वर्षों के बाद रोमन चर्च ने अपने फैसले को बदल कर जो कुछ बुरा किया था उसे सुधारना चाहा और कुछ दिनों के बाद जीन द आर्क को संत की पदवी दे दी।" (पृ० ३३६)

डंडे और घूंसों से

"ईसाई धर्म फैलता गया। इसको गैर-ईसाईयों से परेशानी नहीं थी। जो कुछ लड़ाई-झगड़ा होता था, वह सब ईसाई सम्प्रदाय के लोग आपस में किया करते थे। असहिष्णुता आश्चर्यजनक थी। सारे उत्तर अफ्रीका, पश्चिम एशिया, और यूरोप में भी, बहुत भी जगहों पर लड़ाईयां हुईं, जिनमें ईसाइयों ने, अपने दूसरे ईसाई भाइयों को डंडे, घूसों और इसी प्रकार के दूसरे समझाने के 'नरम' साधनों का इस्तैमाल करके, सच्चा धर्म सिखाने की कोशिश की।"

(पृ० २०४)

इनक्विजिशन

"ईसाई धर्म के रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय के संरक्षण में स्थापित धार्मिक न्यायालय। इसका काम धार्मिक अविश्वास को रोकना और धर्म के सम्बन्ध में नये विचार फैलाने वालों को दण्ड देना था। पहल यह फ्रान्स में स्थापित हुआ और बाद को इटली, स्पेन, पुर्तगाल, जर्मनी इत्यादि में भी फैल गया। मामूली-मामूली स्वतन्त्र विचारों के लिए इसमें लोगों को जिन्दा जला दिया जाता था।"

(पृ० १४६)

उपदेशक को फांसी

"११५५ ई० में, ब्रेशिया (इटली) के लोकप्रिय और ईमानदार उपदेशक एर्नाल्ड पर चर्च का गुस्सा उतरा। एर्नाल्ड पादरियों की विलासिता और भ्रष्टता के खिलाफ प्रचार करता था। उसे पकड़ कर फांसी पर लटका दिया गया। फिर उसकी लाश को जलाकर राख टाईबर नदी में फेंक दी गई कि कहीं लोग उसे यादगार की तरह न रख लें। मरते दम तक एर्नाल्ड शान्त और गम्भीर रहा।"

(पृष्ठ ३२६)

शर्मनाक

"पोप इस मामले में यहां तक बढ़ गया था कि ईसाइयों के गिरोह-के-गिरोह को, जो धार्मिक सिद्धान्तों में उससे जरा भी मत-भेद रखता था पादरियों के तौर-तरीकों की ज्यादा आलोचना करता, चर्च या समाज से बाहर निकाल देता। इन लोगों के खिलाफ बाकायदा युद्ध की घोषणा कर दी जाती थी और इन पर हर किस्म की शर्मनाक बेरहमी और भीषणता का वार होता था।" (पृ० ३२७)

शैतानी हुनर

पोप ने एक धर्माज्ञा (Ediet of Faith) निकाली जिसमें हरेक आदमी को हुक्म दिया गया कि मुखबिर का काम करे। पोप ने केमिस्ट्री (रसायनशास्त्र) को शैतानी हुनर कह कर नाजायज करार दिया था, और मजा यह कि यह सारी हिंसा और अत्याचार ईमानदारी के साथ किया गया था। ये लोग ईमानदारी के साथ इस बात पर यकीन करते थे कि किसी आदमी को जिन्दा जला कर उसकी आत्मा को और दूसरों की आत्मा को बचा रहे हैं। (पृ० ३२८)

साधु जिन्दा जला दिये

इसी समय, या इससे कुछ पहले, इटली में एक आदमी रहता था, जो ईसाई धर्म के इतिहास में एक बड़ा ही आकर्षक व्यक्ति हुआ है। यह असीसी का फ्रांसिस था। यह बड़ा अमीर आदमी था लेकिन इसने अपनी अमीरी को छोड़कर गरीबी इख्तियार

करती थी और बीमारों और गरीबों की सेवा के लिए बाहर निकल पड़ा था। चूंकि कोढ़ी सबसे ज्यादा दुःखी थे और लोग सबसे कम उनकी परवाह करते थे इसलिए खासतौर से वह उनकी सेवा में लगा रहता था। उसने एक संघ चलाया, जो बौद्ध संघ की तरह था। इसे 'सेंट फ्रांसिस का आर्डर' यानी संघ कहते हैं। यह एक जगह से दूसरी जगह प्रचार करता हुआ और लोगों की सेवा करता हुआ फिरता था और हजरत ईसा की तरह अपनी जिन्दगी बिताने की कोशिश करता था। हज़ारों आदमी इसके पास आते थे और बहुत से इसके शिष्य हो गये। जब क्रूसेड चल रहे थे तब यह मिस्र और फिलस्तीन गया था। हालांकि वह ईसाई था लेकिन मुसलमान भी इस शान्त और हर-दिल-अज़ीज़ शख्स की इज्जत करते थे और उन्होंने किसी तरह से उसके काम में दस्तन्दाजी नहीं की। ११८१ से १२२६ तक वह जिन्दा रहा। उसके मरने के बाद उसके संघ की चर्च के ऊंचे अफसरों से टक्कर हो गई। शायद चर्च को यह पसन्द नहीं था कि गरीबी की जिन्दगी पर इतना जोर दिया जाय। गरीबी और सादगी से जिन्दगी बिताने के इस पुराने ईसाई सिद्धान्त को चर्च वाले भूल गये थे। १३१८ ई० में मार्सेलीज में फ्रांसिस के संघ के चार साधु, काफिर होने के अपराध में, जिन्दा जला दिये गये। (पृ० ३२७)

दुबारा ३००० मूल्य एक आना

लेखक व प्रकाशक
चतुरसेन गुप्त, दरियागंज,
पाटौदी हाउस, दिल्ली-७

मुद्रक :—
सार्वदेशिक प्रेस,
दिल्ली-७

स्वाध्याय योग्य महत्वपूर्ण पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
१—सत्यार्थप्रकाश	१।।=)
२—ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	२।।)
३—संस्कार विधि	१।)
४—मनुस्मृति	४)
५—महर्षि दयानन्द सरस्वती	।।=)
६—यजुर्वेद भावार्थ प्रकाश	।।।=)
७—वेदमन्त्रों के उपदेश	।।)
८—वैदिक ज्ञान भण्डार का मूल यज्ञ	।=)
९—सांख्य दर्शन	१)
१०—विदुर प्रजागर	१)
११—हैदराबाद में आर्य समाज का संघर्ष	≡
१२—भरथरी नीति शतक	≡)
१३—व्यवहार भानु	१५ न०पै०
१४—आर्य समाज क्या है ?	।-)
१५—स्वराज्य संग्राम में आर्य समाज का भाग	-)
१६—आर्य नेताओं के व्याख्यान	≡)
१७—ऋषि की न सुनने का फल	-)
१८—उपनिषद् सुधासार	२।)
१९—नेहरू जी की आर्य विचारधारा	।)
२०—भारत मां की अश्रुधारा	।)
२१—यदि आचार्य चाणक्य प्रधान मन्त्री होते ?	-)
२२—स्वर्ग में हड़ताल	।=)
२३—नरक की रिपोर्ट	।)
२४—दैनिक यज्ञ प्रकाश	५।।) सैकड़ा
२५—द्रौपदी सत्यभामा संवाद	=)
२६—भरत की शपथ	)१०
२७—ऋषियों के उपदेश	-)
२८—चाणक्य सूत्र	≡)

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज दिल्ली-७

वेद प्रकाश माला

धर्म और अधर्म

[लेखक—श्री पं० रामचन्द्र देहलवी]

गोविन्दराम हासानन्द
नई सड़क देहली

१०

Scanned with CamScanner

॥ ओ३म् ॥

धर्म और अधर्म

[व्याख्यान—शास्त्रार्थ महारथी श्री पण्डित रामचन्द्र जी देहलवी]

महर्षि दयानन्द धर्म का लक्षण अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "आर्योद्देश्यरत्नमाला" में इस प्रकार करते हैं:—

धर्म—जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन और पक्षपातरहित न्याय सर्वहित करना है, जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरीक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिए यह ही एक मानने योग्य है; उसको धर्म कहते हैं।

आइये, हम धर्म और अधर्म के स्वरूप पर विचार करें और सदैव धर्माचरण करने का निश्चय करें ॥

श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज ने धर्म का लक्षण करते हुए सब से पूर्व ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन करना आवश्यक समझा, जिससे ईश्वर का मानना स्वतः सिद्ध है। उस ईश्वर को न मानने वाला इस लक्षण के अनुकूल धर्मात्मा नहीं समझा जा सकता।

बहुधा ऐसे मनुष्य दुनिया में मिलेंगें, जिनका ईश्वर में विश्वास नहीं, परन्तु सृष्टि नियमों को मानते, और उन पर चलते हैं। ऐसे पुरुष पूर्ण धर्मात्मा नहीं कहे जा सकते। चूंकि उन्होंने नियामक के आवश्यक अङ्ग को नहीं माना, जिसके बिना किसी भी नियम का निर्माण होना असम्भव है।

अनुमान प्रमाण विशेष कर मनुष्य के लिए ही है, जो कारण से कार्य और कार्य से कारण का अनुमान करके अपने कार्यों की सिद्धि करता है। प्रत्येक समय यह आवश्यक नहीं कि कार्य और

कारण दोनों की प्रतीति एक ही साथ हो। यदि दुनिया में कहीं ऐसा नियम होता कि दोनों एक ही साथ होते, तो अनुमान प्रमाण की आवश्यकता ही न होती, जैसे बादलों को देख कर होने वाली वर्षा का, और हुई वर्षा को देख कर उसके कारण रूप बादलों का अनुमान होता है, इसी प्रकार दु:ख को देख कर पाप कर्मों का, और पाप कर्मों को देख कर दु:खों का अनुमान होता है। यदि कोई दु:खों को देख कर पाप कर्मों का अनुमान न करे, या सन्तान को देख कर माता पिता का; तो उसको पूर्ण ज्ञान नहीं कह सकते। इसी प्रकार यदि कोई सृष्टि नियमों को देख कर और स्वीकार करके भी उनके नियामक को स्वीकार न करे, तो वह भी पूर्ण ज्ञानी न समझा जावेगा। और जो पूर्ण ज्ञानी ही नहीं वह पूर्ण धर्मात्मा ही कैसे हो सकता है ? चूंकि धर्मात्मा के लिए ज्ञान पूर्वक कर्मों ही की तो प्रधानता है।

यदि कोई यह शंका करे, कि ईश्वर ने कानून तो बना दिया, पर वह अब कुछ नहीं करता, और न आगे करने की आवश्यकता है। प्रत्येक कार्य उस ही नियम के अनुसार होता चला आ रहा है। और आगे भी होता रहेगा, तो क्या हानि ? इसका उत्तर यह है, कि कानून स्वयं कुछ नहीं कर सकता, जब तक कि चेतन कर्ता उसको अमल में न लावे, जैसे कि "ताजीरात हिन्द" किसी अपराधी का कुछ नहीं कर सकती, जब तक कि पुलिस उसको पकड़ कर जज के सामने पेश न करे और जज उसको उसके अपराध के अनुसार दण्ड न देदे। इसी प्रकार परमात्मा का कानून भी ईश्वर के स्वयं अमल में लाये बिना कुछ नहीं कर सकता।

जो ईश्वर को कानून का बनाने वाला तो मानते हैं, लेकिन चलाने वाला नहीं मानते, उनको यह विचारना चाहिये कि जिस बुद्धि ने कानून का निर्माण किया है, वह ही बुद्धि उसको चला सकती है, प्रकृति जड़ होने से स्वयं न कोई कानून (नियम) बना सकती है

और न किसी के बनाये नियम पर स्वयं स्वतन्त्रता से चल सकती है। जीवात्मा भी अल्पज्ञ होने से बिना ईश्वर से शरीर तथा ज्ञान प्राप्त किये; न कोई नियम बना सकता न चल तथा चला सकता है। जीवात्मा इस प्रकार की ईश्वरीय सहायता प्राप्त करके भी, जो नियम बनाता या चलाता है, उनको भी वह अन्य पुरुषों की सहायता से ही कार्य रूप में परिणत करता है, कई स्थानों पर स्वयं अल्पज्ञ और अल्प शक्ति होने के कारण, अपनी इच्छा के विरुद्ध फल की प्राप्ति, और असफलता का पात्र बनता है। जैसे आपने देखा होगा कभी कभी बिना किसी इच्छा के स्वयं ठोकर लग जाती, तथा भोजन करते समय दांतों के तले जीभ आकर कष्ट देती है। जिससे कि यह सिद्ध है कि कभी कभी जीवात्मा अपने शरीर पर भी पूर्ण अधिकार नहीं रख पाता। पर परमात्मा सर्वज्ञ और सर्व शक्तिमान होने के कारण इकला ही सब नियमों को बनाता, और स्वयं उन्हें चलाता है, यह हम में और परमात्मा में भेद है।

अब प्रश्न उठता है कि ईश्वर की आज्ञा कौन सी मानी जाय? मुसलमान भाई कहते हैं, कि कुरान ईश्वर का हुकम है। ईसाई बाईबिल को खुदा की पुस्तक बतलाते हैं, इस ही तरह अन्य मजहब भी। परन्तु इन सब की पुस्तकों में परस्पर भेद और विरोध होने के कारण सब को ईश्वर को आज्ञा नहीं कहा जा सकता। ईश्वरीय आज्ञा वह ही हो सकती है जो ईश्वर की भांति सार्वभौम हो, एक देशी न हो। अर्थात् सब मनुष्यों के लिये हितकर ही किसी विशेष देश या जाति का पक्षपात न हो। तथा उसके दया, न्यायादि गुणों के विरुद्ध न हों, अर्थात् वेदानुकूल हो।

पक्षपात-रहित न्याय

यह बहुत कम देखा जाता है कि मनुष्य न्याय करे, और वह पक्षपात रहित हो। मनुष्य अल्पज्ञ और अल्प शक्तिमान् होने के कारण कई दोषों से युक्त होता है। धन का लालच, रिश्तेदारी,

मित्रता दूसरे का भय और मोह आदि उसको पूर्ण न्याय नहीं करने देते। ईश्वर इन त्रुटियों से रहित होने के कारण, पक्षपात रहित न्याय करता है। अतः जो पुरुष ईश्वरीय गुणों के अनुकूल अपने गुण बना कर संसार में कार्य करता, और अपने जीवन को व्यतीत करता है, वह एक समय पूर्वोक्त सम्पूर्ण दोषों से युक्त होकर पक्षपात-रहित न्याय करने लग जाता है। पक्षपाती पुरुष अपना दायरा अत्यन्त संकुचित रखता है। वह केवल अपने में या जिसके साथ वह पक्षपात करता है, उस ही तक सीमित रहता है। परन्तु पक्षपात रहित कर्म करने वाला यजुर्वेद के—

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति ।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न वि चिकित्सति ॥

॥ यजु० ४० मन्त्र ६ ॥

अनुसार अपने को सब प्राणियों में और सब प्राणियों को अपने में समझता है। एक देशी जीवात्मा के लिए यह असम्भव है कि वह ईश्वर की तरह, सब वस्तुओं में व्याप्त हो जाय। उसके लिए एक यह ही प्रकार हे कि वह अपने को "सर्व प्रिय" "सर्व हितकारी" बना सके यह ही इसकी सर्वव्यापकता है।

सर्वहित

जिस न्याय में किसी का अहित न हो, वह पक्षपात रहित न्याय है। इसका दूसरा नाम सर्वहित है। ईश्वर इतना गम्भीर है कि दिन रात सब का न्याय करता हुआ भी प्रत्येक जीव के हित को लक्ष्य में रख कर एक जीव के बुरे कर्मों को दूसरे पर प्रकट नहीं करता चूंकि वह जानता है, कि बुराई के छुड़ाने में ऐसी बात साधक नहीं होती, अपितु बाधक होती है। जो जीव धर्म का आचरण करना चाहे उसको "सर्व हितकारी" अवश्य होना चाहिए। प्रायः देखा जाता है, कि मनुष्य एक दूसरे की निन्दा करने के लिए, घर घर मारे मारे फिरते हैं, और उनको तब तक चैन नहीं पड़ता, जब तक

दस बीस स्थानों पर किसी की निन्दा न कर आवें। परन्तु वे यह नहीं विचारते कि ऐसा करने से किसी का भी कोई हित नहीं होता, बल्कि अपनी ही आदत खराब होती है, और परस्पर राग, द्वेष की वृद्धि हो कर वैमनस्य बढ़ता है।

स्वार्थी पुरुष भी पूर्ण न्याय या सर्वहित नहीं कर सकता। वह अन्यों के लाभ की अपेक्षा स्वार्थ को अधिक मूल्यवान समझता है, और दूसरों के बड़े बड़े लाभ को अपने तुच्छ से तुच्छ लाभ पर कुर्बान कर देता है। बहुत से मतों के प्रवंतकों ने अपने मान और प्रतिष्ठा के, अपनी न्यूनताओं (कमजोरियों) को भी अपने अनुयायियों का एक धार्मिक नियम बना दिया और कौम की आगे होने वाली उन्नति में एक जबर्दस्त रोड़ा अटकाया। जिसके फलस्वरूप आज कुछ लोग 'शारदा एक्ट' जैसे आवश्यक और अत्युपयोगी कानून को भी अपने मजहब के विरुद्ध मान कर उसका विरोध करते और कहते हैं कि हमारे पूर्वज इस प्रकार की कम उम्र वाली कन्याओं से शादी कर गये हैं, अतः यह कानून उनके विरुद्ध होगा, इस लिये हम नहीं मान सकते। इसके विरुद्ध ऋषि लोग ईश्वरभाव प्राप्त हो, तथा सर्वहित को लक्ष्य में रख कर जो कुछ कार्य कर गये, वह उन सम्पूर्ण दोषों से रहित था, जिन से सामान्य पुरुष प्रायः शीघ्र मुक्त नहीं हो पाते।

प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरिक्षित

प्रत्यक्षादि प्रमाण जो आगे आयेंगे, उनकी व्याख्या वहां की जावेगी। यहां केवल यह ध्यान रखना चाहिये, कि किसी चीज के लिए परीक्षा का द्वार बन्द नहीं किसी भी कार्य को खूब सोच समझ और परीक्षा कर के करना चाहिये। यदि हम उन परीक्षाओं में ठीक और यथार्थ उतरे, तो धर्म और यदि न उतरे तो उसे अधर्म (अकर्तव्य) समझना चाहिये। इसलिये कि प्रत्येक व्यक्ति अपने

कर्म का स्वयं उत्तरदाता हो, स्वयं परीक्षा करके ही प्रत्येक कार्य को करने की आज्ञा दी गई है। चाहे रेलवे (Railway) का प्रबन्ध इञ्जिनियरिंग (Engineerin Deptt) के आधीन रक्खा गया है, और आदमी दिन रात लाइन और पुलों की देखभाल करते रहते हैं, पर फिर भी ड्राइवर को सर्च लाइट और अपनी आंखों से देख कर चलने चलाने की आज्ञा दी जाती है, ताकि उसका वैयक्तिक उत्तर-दायित्व उसके कार्य के साथ रहे।

वेदोक्त

"वेद" जो कि "विद् सत्तायाम विद् ज्ञाने विद् विचारणे" तथा "विद्ल लाभे" इन धातुओं से सिद्ध होता है, जिनका अर्थ हुआ कि जो सत्ता ज्ञान विचार और लाभ के सहित हों अर्थात् सर्व प्रथम वेद द्वारा हमें प्रत्येक वस्तु की सत्ता का उपदेश होता है, तत्पश्चात् उन वस्तुओं, तथा उनके गुण और व्यवहारादि का ज्ञान होता है। ज्ञान होने के अनन्तर ही हम उसके सूक्ष्म विषयों पर विचार करने में समर्थ हो पाते हैं, अन्त में इसी क्रम से हमें उस ज्ञान और विचार के अनुरूप लाभ की प्राप्ति होती है। इस प्रकार उस वेद से उपदिष्ट कर्मों की जो कि मोटे शब्दों में ज्ञानानुकूल और विचार पूर्वक हो उन्हें धर्म कहा जाता है। इस ही लिये महात्मा मनु ने अपनी स्मृति में..."वेदोऽखिलो धर्म मूलम् तथा धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाण परमम् श्रुती:" कहा अतएव प्रत्येक व्यक्ति को इस प्रकार के वेदोक्त कर्मों का करना ही अपना धर्म समझना और उसका अनुष्ठान करना चाहिये।

अधर्म—जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा को छोड़ कर और पक्षपात सहित अन्यायी होकर बिना परीक्षा करके अपना हित करना है जो अविद्या, हठ, अभिमान, क्रूरतादि दोषों से युक्त होने के कारण वेद विद्या से विरुद्ध हैं, और सब मनुष्यों को छोड़ने के योग्य है। वह अधर्म कहाता है।

यद्यपि किसी विशेष व्याख्या की आवश्यकता नहीं, चूंकि धर्म समझ लेने के बाद सिर्फ इतना विशेष याद रखना चाहिये कि जो धर्म से विपरीत अर्थात् उल्टा हो, उसे अधर्म कहते हैं। ऋषि दयानन्द उन मत मतान्तरों को इसी कसौटो पर कस मत मतान्तर के नाम से निर्देश किया, या मजहब बतलाया । चूंकि उन सम्पूर्ण मजहबों में जो कि अपने को धर्म के नाम से पुकारते थे, उपर्युक्त दोष थे, जैसे कोई ईश्वर की सत्ता को ही न मानते थे। अर्थात् नास्तिक थे जब वे ईश्वर ही को न मानते थे तो फिर ईश्वर की आज्ञा को ही कैसे मानते, लिहाजा ऋषि ने उन्हें भी कहा, कि तुम्हारा मत धर्म नहीं कहा जा सकता, चूंकि वह धर्म के एक आवश्यक अंग से रहित हैं, अतः वह मजहब है। इस ही प्रकार जो लोग ईश्वर की सत्ता को मानते थे पर उसकी आज्ञाओं में पक्ष-पात मान कर, किसी एक देश या जाति के लोगों से पक्षपात या प्रेम, और दूसरों से नफरत प्रकट करते थे, या ईश्वर के नाम पर यज्ञों में, अथवा देवी देवताओं के सामने, पशु हत्या आदि करके अपनी क्रूरता और मूर्ति पूजा आदि करके जड़ में चेतन को मान कर, अपना अविद्या प्रियता का परिचय देते थे, उन्हें तथा जिनके ग्रन्थों में निरी असम्भव और विश्वास न करने लायक बातें भरी पाई, ऋषि ने कहा कि तुम्हारा मत भी सिर्फ मत यानी मजहब है। वह धर्म का स्थान नहीं ले सकता। इसी लिये वह सम्पूर्ण मनुष्य के लिये मान्य न होकर सिर्फ तुम लोगों ही की स्वार्थ पूर्ति के लिये हो सकता है। अतः प्रत्येक समझदार मनुष्य को इस प्रकार मजहबों, या मत मतान्तरों को दूर से ही प्रणाम करके छोड़ देना चाहिये जिससे कि उसका जीवन व्यर्थ बरबाद न हो।

॥ इत्योम् ॥

बदलिया प्रिंटिंग प्रेस, देहली।

वेद प्रकाश माला
सामाजिक व्यवहार
लेखक—लालचन्द जी मेरठ
गोविन्दराम हासानन्द
नई सड़क देहली

॥ ओ३म् ॥

सामाजिक व्यवहार

हमारा समाज एक बृहत परिवार या कुटुंब है जिस में आपस में विश्वास प्रेम और सौहार्द होना आवश्यक है। आपस के समन्वय और सामंजस्य में विपुलशक्ति संचित होती है; और परिणाम होता है एक शक्ति संपन्न समाज, जिसका प्रभाव होना अवश्यभावी है। विपरीत इसके जिस समाज में समता का अभाव है, आपस में सन्देह है, कोई एक दूसरे की उन्नति को देख नहीं सकता। वहां अवश्य अशान्ति है, यदि आपस में कोई व्यक्ति अथवा परिवार उन्नत हुआ वैभव संपन्न हुआ, और उसके ऐश्वर्य तथा समृद्धि को देखकर ईर्ष्या उत्पन्न हुई तो ऐसे समाज में संपन्न व्यक्ति परिणाम स्वरूप निर्धन व्यक्तियों अथवा परिवारों से घृणा करेंगे ही; और इस प्रकार विद्वेष अवश्य उभरेगा। यही अवांछ-नीय चक्र आजकल चल रहा है और सभी की उन्नति रुकी सी दीख रही है, क्योंकि एक दूसरे की उन्नति में परस्पर सहयोग नहीं मिल रहा। आर्य समाज का ९ वां नियम कि प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये, एक स्वभाविक नियम है जो वास्तव में समाज शास्त्र का निचोड़ है। इसी नियम के साथ ७ वां नियम कि सब से प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिये, एक ऐसा पंचम नियम है और अपने उद्देश्य को पूर्ण प्रकार व्यक्त करता है कि सभी धर्माचरण करते हुए एक दूसरे से प्रीतिपूर्वक यथायोग्य वर्ते तो समाज में विषमता नहीं उभरेगी। समाज में जब तक ऋत् और सत्य रूप धर्म चरितार्थ होता रहेगा तभी तक प्रेम पावन रहेगा और समाज में उच्छृखलता

न आने पाएगी। यथायोग्य धर्मानुसार व्यवहार से कभी अनु-शासन-हीनता न आ सकेगी और सभी एक दूसरे से आत्मीयता का व्यवहार करते हुए संतुष्ट रहेंगे। ऐसी स्थिति होने पर ही यह कहा जा सकेगा कि समाज सुसंस्कृत है क्योंकि उसमें प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से न केवल दिखावे का शिष्टाचार करेगा अपितु हृदय से हितेच्छुक होगा और हितकारी भी होगा। ऐसे समाज में ऐश्वर्य समृद्धि विपुलता और शक्ति सदा बनी रहती है और सब का जीवन प्रभावशाली होता है और सभी आदर पाते हैं, यह है आर्यसमाज अर्थात् श्रेष्ठ जनों का समाज क्योंकि इसमें सभी व्यक्ति चरित्रवान हैं और एक दूसरे के प्रति अपना दायित्व समझते हैं। यह एक आदर्श समाज है। वास्तव में ऋषिदयानन्द आर्य समाज को एक आदर्शसमाज के रूप में ही संगठित करना चाहता था। भारतीय वाङमय में "आर्य" सर्वश्रेष्ठ आस्तिक मनुष्य की संज्ञा है जिसमें भगवान् के दिव्य गुण व्यवहार में दीखते हैं। आर्य होना जहां एक गौरव का नाम है वहां साथ ही इस नाम की जिम्मेदारी भी बहुत है।

समाज में आपस में समता का व्यवहार होना ही चाहिये। जहां समन्वय की भावना चरितार्थ होती है वहां ही श्री और शोभा होती है वहां ही लोग शक्तिसंपन्न और ऐश्वर्यवान होते हैं वहां किसी प्रकार का भी अभाव नहीं दीखा करता। आपस के समता के वर्ताव में ही समवेदना सहानुभूति और सहयोग दीखते हैं। वहां कोई भी दीन नहीं होता क्योंकि सब को एक दूसरे का सहयोग प्राप्त होता रहता है।

समाज में शरीर के अवयवों की भांति सभी व्यक्ति एक दूसरे के लिए कार्य करते रहें तभी समाज रूपी विराट शरीर स्वस्थ रहता है। आजकल प्रायः आपस के सहयोग का समाज में अभाव सा ही है, विशेषतः धनी तथा निर्धन वर्ग में आपस में संपर्क तक भी नहीं। समाज में आपस का मेल जोल मिल बैठना भी बहुत कम हो रहा है। परस्पर की स्पर्धा ईर्ष्या, घृणा और द्वेष बहुत दीख रहे हैं। सत्कार, आदर, सम्मान और उदारता रूपी "यज्ञ भावना" की बहुत कमी है, इसके कारण समाज की शक्ति का ह्रास हो रहा है। ऊपरी शिष्टाचार और हृदय में ईर्ष्या अथवा घृणा की भावना चाहे दबी या छिपी रहे पर एक न एक दिन उभर ही आती है और आपस में सन्देह पनपने लगता है और इस प्रकार विश्वास क्षीण होने से प्रेम और सौर सौहार्द होने ही नहीं पाता। स्नेह और सहृदयता का अभाव निजी स्वार्थ के कारण है। आत्मसंयम से और भगवान को घट घट वासी अनुभव करने से स्वार्थ की वासना कम हो सकती है और इस प्रकार आपस का विश्वास स्थिर हो सकता है। जब तक हम निजी हितों अथवा निजी स्वार्थों को ही पूरा करते रहेंगे, आपस की मैत्री स्थिर न होगी, क्योंकि उसमें सदभावना न होने से दृढ़ता आ ही नहीं सकती। सौहार्द और स्नेह के लिए हृदय की पवित्रता की अपेक्षा है। स्वार्थी व्यक्ति का हृदय शुद्ध नहीं होता वह तो मैत्री का स्वार्थ पूर्ति के लिए ही किया करता है। हृदय से छल कपट कुटिलता तथा परिग्रह के भाव हटाये बिना आपस का विश्वास ही स्थिर नहीं हो सकता तो मैत्री और सौहार्द का प्रश्न ही नहीं उठता। वेद में आपस में एक दूसरे को सम्यक्

जानने, एक दूसरे से संपर्क बढ़ाकर एक दूसरे को सम्यक् रूप से पहचानने तथा भली प्रकार जान बूझकर आपस में संगठित होकर रहने और आपस में विचार करके एक निश्चय पर पहुंचकर उसे तत्परता से पूरा करने का आदेश है और वेद में यह भी आज्ञा है कि सभी अपना कर्तव्य भाग को पूरा करते हुए सभी समुन्नत हों। ये मंत्र ऋग्वेद मण्डल १० सूक्त १९१ मे है और अथर्ववेद कांड ३ सूक्त ३० और कांड ६ सूक्त ६४ में है जो हम नीचे उद्धृत कर रहे हैं—

संगच्छध्वं, संवदध्वं, संवोमनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ॥
समानो मंत्रः समितिः समानी समानं मन सहचित्तमेषाम् ।
समानं मंत्रमभिमंत्रयेवः समानेन वो हविषा जुहोमि ॥
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सु सहासति ॥

ऋ० १०।१९१+२-४ ॥

संजानीध्वं संपृच्यध्वं संवो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथापूर्वे संजानान्य उपासते ॥
समानो मंत्रः समितिः समानी समान व्रतं सह चित्तमेषाम् ।
समानेन वो हविषा जुहोमि समानचेतो अभिसंविशध्वम् ॥
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥

अ० ६।६४।१-३ ॥

सहृदयं सामनस्यं अविद्वेषं कृणोमि वः ।
अन्यो अन्यं अभिहर्यत वत्सं जातं इवाघ्न्या ॥

अ० ३।३०।१॥

ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मावित्रोष्ट संराधयन्तः सधुराश्चरन्तः ।
अन्योअन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान वः संमनस्यकृण्येमि॥

अ० ३।३०।९

समानी प्रपा सह वो अन्नभागः समाने योक्त्रे सह वोयुनिज्म।
समञ्चोअग्निसपर्वतारानाभि इवाभितः ॥ ६ ॥
स ध्रीचीनान्वः संमनसस्कृणोम्येकश्नुष्टीनत्संवनेन सर्वान् ।
देवाइवामृतं रक्षमाणाः सात्रपातः सौमनसोवोअस्तु ॥७॥

ऋग्वेद के इस विख्यात सूक्त का नाम संज्ञानसूक्त है, जिसका अर्थ है सम्यक् ज्ञान, अत्यन्त आवश्यक ज्ञान और उत्तम ज्ञान। यह सूक्त एक होने का, मिलकर रहने का, संगठन करके अपना बल बढ़ाने का ज्ञान देता है। यह ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है इस ज्ञान की विशेषता है।

अथर्ववेद के सूक्तों का नाम सांमनस्यम् है। अर्थात् वह ज्ञान जिससे आपस में विश्वास प्रेम और सौहार्द स्थिर रहे।

ये दोनों सूक्त मनुष्यों के परम हित का ज्ञान देते हैं अब हम हैं अब हम संक्षेप में मन्त्रों का अर्थ देते हैं।

ऋग्वेद का सूक्त—

आप लोग परस्पर अच्छी प्रकार मिलकर रहो, परस्पर मिलकर प्रेम से बातचीत करो आप लोगों के मन एक हों जिस प्रकार पहले दिव्यजन अपना कर्तव्य ऋण श्रद्धा से संपन्न करते रहे वैसा तुम भी करो आप सब के विचार एक हों आप सब की सभा एक हो आप के विचारों में समन्वय हो आप सब का एक उद्देश्य हो आप सब को एकता के रहस्य का उपदेश किया है आप सब एक ध्येय के लिए समर्पण करो। आप सब की आकांक्षा एक हो, संकल्प एक हो हृदय एक हो मन एक हो आप सब एकता के सूत्र में पिरोए हुए रहकर सुशोभित होओगे।

यह सच्ची उन्नति का सच्चा साधन वेद भगवान ने बताया है।

अथर्ववेद का आदेश।

आप सब परस्पर भली प्रकार एक दूसरे को जानो आपस का संपर्क बढ़ाओ आप सब का एक ही व्रत हो आप सब एक चित्त धारण करो—६।६४ के भाव ऋग्वेद के समान ही हैं। मैं आप सब को एक हृदय वाला एक चित्र वाला करता हूं आप सब गृहस्थ लोग जिस प्रकार नव जात वत्स से गाय प्यार करती है एक दूसरे को मिलने के लिए प्रेम से खिचकर आओ।

आप लोग श्रेष्ठों का सन्मान करने वाले बनो, श्रेष्ठ जनों का आदर करने वाले बनो, उत्तम विचार करने वाले बनो आपस में विरोध मत करो उत्तम प्रकार मिलकर कार्य संपन्न करो समान रूप से एक एक व्यक्ति कार्यभार का दायित्व समझे कार्य के संपन्न होने तक पूरी तत्परता से कार्य में लगे रहो एक दूसरे के साथ प्रेमपूर्वक मीठा भाषण करते हुए आपस में मिले रहो। आप लोगों को मैं एक ध्येय से चलने वाले और एक मन वाले करता हूं आप सब उद्देश्य को सामने रखो और उसकी सिद्धि के लिए प्रयत्नशील रहो। आप सब का जलपान करने का स्थान एक हो आप सब इकट्ठे होकर उपासना किया करो आप सब को मैं एक ध्येय के लिए कार्य करने वाले और एक मनोभाव वाले करता हूं आप सब को एक कार्य में उद्योग करने वाले और एक स्थान पर एकत्र होने वाले तथा एक दूसरे से प्रेम करने वाला करता हूं आप सब कर्तव्य को तत्परता से करो और सब एक जैसा भोजन करो आप में समानचित्त हो, आप का खान पान एक सा हो, आप सब सत्य आत्मा की रचना करते हुए दिव्यं जनों जैसे सायं प्रातः अवश्य उत्तम मन वाले होओ। सायं प्रातः से यहां तात्पर्य सदा प्रेमपूर्वक सहाय होने का आदेश है।

ये वेद के स्वर्णमय वचन सदा स्मरण रखने योग्य हैं, इन पर आचरण करने से मानव समाज में परस्पर प्रेम और सौहार्द-विकसित होकर सभी समुन्नत होंगे।

"सामनस्य" के इसी विषय को अथर्ववेद ६।६४।३८ तथा ७।५२ में भी कहा गया है। प्रायः शब्द एक से ही हैं। इन से यह निश्चित होता है कि वेद भगवान मानवों को उनके चरनहित की शिक्षा दे रहे हैं और सभी मनुष्य आपस में एक मन होकर उन्नत हो ऐसा स्पष्ट आदेश दे रहे हैं। आपस का सामंजस्य और समन्वय एक दूसरे का सम्यक् ज्ञान और आपस का मेल अत्यन्त आवश्यक है। सभी मनुष्य एक दूसरे को ठीक ठीक जाने आपस में सम्पर्क बढ़ाएं प्रेम मिलन करें और विरोध न करें तो यह हमारा जगत ही स्वर्ग हो जायगा।

आपस की सहृदयता और सामनस्य के बिना सामाजिक शक्ति का ह्रास हो रहा है और व्यक्ति भी एक दूसरे की सहायता के अभाव में हीन से रह रहे हैं। यह स्थिति वेद अनुकूल जीवन व्यवहार बनाकर बदलनी चाहिये। वेद के अनुसार वर्ताव करने से सर्व मंगल होगा। वेद का स्वाध्याय जीवन यव्हार को शुद्ध परिष्कृत करने के लिए किया जाना चाहिये। केवल पाठमात्र से विशेष लाभ नहीं हो रहा है। हमने व्यक्त रूप में तथा सामूहिक रूप में उन्नत होना है, यह काम करने का है। हमें एक सशक्त और प्रभावशाली समाज बनाना है। यह कार्य चरित्र गठन से ही संभव है। हमारा जीवन व्यवहार निष्कपट और निश्चल हो तो अवश्य आपस में विश्वास विकसित होगा विश्वास सारी उन्नति का केन्द्र है। जहां आपस में विश्वास और सहृदयता है वह समाज ऐश्वर्य सपन्न होगा और उस समाज के व्यक्ति महान कार्य संपन्न कर सकेंगे। इस प्रकार उनका अपना व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा और उनका समाज भी उन्नत होगा और समर्थ होगा। आपस के जीवन व्यवहार की पवित्रता ही नैतिकता है, यही ऋत् है। आपस में ऋत् का व्यवहार करने से पुनः भारत धन धान्य संपन्न सशक्त और प्रभावशाली राष्ट्र हो सकेगा।

नई खोज　　　ओ३म्　　　नये विचार

भगवान राम पर साढ़े आठ लाख वर्ष से लगे कलंक का निराकरण

मर्यादा पुरुषोत्तम् भगवान राम एवं शूर्पणखा की नाक

ले०—श्री पं० राम चरित्र पाण्डेय, साहित्यरत्न,
एम० ए० एल० टी-प्रवक्ता

५५२/१ राजेन्द्र नगर, लखनऊ—४

श्रीमती मोदिनी देवी धर्मपत्नी स्व० श्री प्यारे लाल गुप्त माता श्री मनोहर लाल गुप्त पी०सी० एस० के अनुकरणीय सहयोग से प्रकाशित।

प्रकाशक—आर्य समाज आर्यनगर, लखनऊ

वितरक—लक्ष्मी केमिकल वर्कस, राजाहोटल
रामकृष्ण पार्क अमीनाबाद, लखनऊ

प्रथमावृत्ति १०,०००　　　मूल्य २५ पैसे

नम्र निवेदन

राम नवमी के पावन पर्व पर भगवान राम की मर्यादा की रक्षा का यह प्रयास इसलिए अत्यावश्यक समझा कि पौराणिक जनता की मान्यतायें तो अन्धविश्वास से ओत-प्रोत होती ही हैं परन्तु हमारे आर्य भाई बहिन भी गहन विचारों द्वारा उन अन्धविश्वास जन्य मान्यताओं का स्पष्टी करण करके निराकरण करने में असमर्थ रहते हैं या टाल मटोल की नीति अपना कर तथ्य को छिपा देते हैं।

हमारा विचार है कि किसी भी अन्ध विश्वास जन्य मान्यता को दो टूक न करके उसका वैदिक दृष्टिकोण से विचार प्रस्तुत कर वास्तविक मार्ग दर्शन करना चाहिए जिससे कटुता का वातावरण नहीं उत्पन्न होता वरन् वास्तविक तथ्य हृदय को स्वीकार हो जाता है। इसी आधार पर उक्त विचार प्रस्तुत किये हैं।

मर्य्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम

तथा शूर्पणखाँ की नाक

सदैव की भाँति राम नौमी का आगमन हो गया, सर्वत्र भगवान राम की झाँकियों का आरम्भ होने लगा। स्थान स्थान पर रामलीला, रामायण का अखण्ड पाठ विशेष समारोह से किया जायेगा। यों तो सारे भारत में परन्तु विशेष कर उत्तरी भारत में रामायण के स्वाध्याय का अत्यधिक प्रचार है जो चरित्र के लिये एक शुभ तथा हितकर लक्षण है क्योंकि महापुरुषों की जीवन गाथायें ही जाति को जीवन प्रदान करती हैं।

भगवान राम की गाथा को लगभग पौने नौ लाख वर्ष का समय व्यतीत हो गया आदि कवि बाल्मीक का आधार लेकर अनेक रचनायें की गईं जिनमें गोस्वामी तुलसीदास को विशेष स्थान प्राप्त है। सभी रामायणों के पाठकों का

चाहे वे विद्वान हों अथवा अविद्वान, आज तक यही विश्वास घर किये हुए दृढ़ है कि भगवान राम ने शूर्पणखाँ के नाक कान कटवा लिये थे ।

विगत वर्षों के आर्य मित्र अंक में श्री पूज्य पं० शिव दयाल जी द्वारा उक्त शीर्षक देकर भगवान राम का मर्यादा पुरुषोत्तम होना सिद्ध किया गया था । योग्य विद्वान श्री पं० जी ने आदि कवि बाल्मीकि जी के उदाहरण प्रस्तुत करते हुये अत्यधिक विद्वता का परिचय दिया था परन्तु भ्रम ज्यों का त्यों ही बना रहा कि शूर्पणखाँ के नाक कान काट कर भी भगवान राम मर्यादा पुरुषोत्तम है ।

उसी समय से मैं इस भ्रम के निवारणार्थ लेखनी को गति देने की सोच रहा था परन्तु समयाभाव के कारण भावों को मूर्त रूप न दे सका, आज राम नवमी के पवित्र पर्व के स्वागत में अपने वे उद्गार राम भक्तो के सम्मुख मनन करने हेतु प्रस्तुत कर रहा हूँ जिससे भगवान राम पर लगा कलंक धुल सके ।

सज्जनों ! मैं विद्वान व लेखक नहीं हूँ; हाँ आर्यसमाज का तुच्छ सेवक तथा वैदिक विचार धारा का पथिक अवश्य हूँ; और रात दिन मनन करता रहता हूँ । मैंने सोचा कि जिस नारी को वेद, शास्त्रों तथा मनुस्मृति में पूज्य कह कर श्रेष्ठतम पद प्रदान किया गया हो उस नारी को भगवान राम द्वारा नाक-कान कटवाना कहाँ तक उचित एवं संगत है और यदि यह सत्य है तो मर्य्यादा की रक्षा सम्भव नहीं, और फिर त्रेता युग में जबकि धर्म की प्रधानता चतुर्दिक थी साथ ही ऐसे व्यक्ति द्वारा जो कालिदास के कथनानुसार वेद वेदांग का

विद्वान, संयमी तथा परम सन्तोषी क्रोधजित हो; असम्भव प्रतीत हुआ।

मेरे प्यारे भाई तथा बहिनों ! भाषा साहित्य का अध्ययन करते हुये निम्न तथ्य पर पहुँचा कि भगवान राम मर्य्यादा पुरुषोत्तम हैं तथा उन्होंने शूर्पणखाँ के नाक-कान कटवाये अवश्य परन्तु कैंची, चाकू छुरी एवं खड्ग आदि किसी अस्त्र-से नहीं, और न किसी प्रकार का रक्तपात ही हुआ।

इस रहस्यमयी कथा को निम्न संवाद द्वारा श्रवण करें :—

एक बार मैं अपने विद्यालय में था। एक छात्राध्यापक जो एल० टी० का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे, मेरे विद्यालय में प्रयोगात्मक प्रशिक्षण के प्रति आते थे, आये। वे सज्जन हिन्दी से एम० ए० ब्राह्मण वंश की उप जाति में से शुक्ल थे, प्रचलित धार्मिक साहित्य से रुचि एवं जानकारी रखते थे, मेरे को नमस्कार करते हुए बोले कि श्री पं० जी ! यह घण्टा मेरा तथा आपका खाली है आओ कुछ धर्म चर्चा ही हो जाय। मैंने हँसते हुए उत्तर दिया बहुत अच्छा। मुझे तो धर्म चर्चा में अत्यधिक आनन्द की अनुभूति होती है। फिर क्या था, हम दोनों अध्यापक कक्ष में बैठ गये।

श्री शुक्ल जी ने प्रश्न किया कि क्या भगवान राम मर्यादा पुरुषोत्तम् थे ?

मैंने उत्तर दिया शत प्रतिशत और यदि सम्भव हो तो इससे भी अधिक।

श्री शुक्ल जी—राम ने शूर्पणखाँ के नाक-कान काट लिये और फिर भी मर्यादा पुरुषोत्तम् बने रहे ?

Scanned with CamScanner

मैंने मुस्कराते हुए पूछा कि शुक्ल जी काटे नहीं कटवाये थे ?

श्री शुक्ल जी—अच्छा यही सही।

मैं—अच्छा यह बताओ कि क्या सचमुच कटवा लिये थे।

श्री शुक्ल जी—और क्या। वाल्मीकि रामायण, तुलसी-कृत रामायण, आध्यात्मिक रामायण तथा श्री राधेश्याम रामायण में तो ऐसा ही लिखा है तथा सब लोग ऐसा ही जानते तथा मानते हैं।

मैं—शुक्ल जी बड़ा ही खून खच्चर हुआ होगा ?

शुक्ल जी—अवश्य हुआ होगा।

मैं—अच्छा शुक्ल जी यह बताओ कि शूर्पणखाँ की मरहम पट्टी भी कहीं की गई कि नहीं।

शुक्ल जी—नहीं जी मरहम पट्टी की तो चर्चा किसी ने नहीं की।

मैं—वाल्मीकि जैसा सहृदय कवि, निषाद द्वारा मारे हुए क्रौञ्च पक्षी को देखकर द्रवित हो उठा और बलात् करुणा की धारा फूट पड़ी कि "मानिषाद त्वमगमा सास्वतीसमाह" कहने वाले कवि को शूर्पणखाँ की दशा पर दया नहीं आई जो कहीं ड्रेसिंग करा कर सहानुभूति प्रगट कर देता और तुलसी जैसा सन्त कवि जो स्वयं कहता है कि **"सन्त हृदय नवनीत समाना"** ऐसा कठोर एवं निर्दयी हो गया कि शूर्पणखाँ के खून खच्चर पर चुप्पी साध गया। दुःख है ! अच्छा छोड़ो इस विवाद को जाने दो। दोनों कवि वज्र हृदय तथा

निर्दयी ही सही। अच्छा अब यह बताओ कि फिर शूर्पणखाँ कहाँ गई ?

शुक्ल जी—खर तथा दूषण के पास शिकायत लेकर गई।

मैं—तो शूर्पणखाँ खून बहाती गई होगी या मरहम पट्टी करा कर गई होगी !

शुक्ल जी—जी हाँ। कोई एक बात अवश्य हुई होगी।

मैं—अब यह बताओ कि नाक कान कटने की बात शूर्पणखाँ को बतानी पड़ी या खर दूषण ने देख कर ही जान लिया।

शुक्ल जी—शूर्पणखाँ को बताना पड़ा कि मेरे नाक कान काट लिये गये।

मैं—क्या खर दूषण अन्धे थे जो उन्होंने देककर नहीं जान पाया। व्यबहार में तो यही देखा जाता है कि किसी के पट्टी बंधी देखकर स्वजन आदि अपने आप ही पूँछ बैठते हैं कि यह क्या हो गया ! और फिर सामने ही साइन बोर्ड साफ हो और फिर भी उसे बताना पड़े कि मेरे नाक कान काट लिये गये। वे दोनों पूँछ सकते थे कि बहिन ! यह कैसे, क्या हो गया; यह शोभा कैसे बिगड़ गई ! तब शूर्पणखाँ कहती तो उचित था। अच्छा बताओ फिर शूर्पणखाँ कहाँ गई !

शुक्ल जी—रावण के दरबार में जाकर रावण से शिकायत की।

मैं—रावण ने उसके मुखमण्डल को देखकर जान लिया था या शूर्पणखाँ को बताना पड़ा !

शुक्ल जी—जी हाँ वहाँ भी शूर्पणखाँ को ही बतलाना पड़ा।

मैं—तो क्या रावण भी अन्धा था ?

शुक्ल जी—अब क्या कहूँ कुछ समझ में नहीं आता। अब तो बुद्धि कुण्ठित हो गई। अब आप ही इसका स्पष्टीकरण करें। अत्यधिक कृपा होगी।

मैं—आपका अगला पीरियड (घण्टा) कहाँ है ?

शुक्ल जी—आठवीं कक्षा में हिन्दी पढ़ाना है।

मैं—अच्छा बताओ कि किसी विद्यार्थी ने प्रश्न कर दिया कि मास्टर साहब ! "नाक कट गई" तो आप उसे मेडिकल कालेज लेकर भागेंगे या अर्थ बतावेंगे ?

शुक्ल जी—अर्थ बतलायेंगें।

मैं—"नाक कट गई" का क्या अर्थ हुआ ?

शुक्ल जी—यह कहावत है। इसका अर्थ है अपमान हो गया।

मैं—यही अर्थ रामायण में फिट कर दो और देखो कि भगवान राम की मर्यादा की रक्षा तथा वाल्मीकि एवं तुलसी की कठोरता एवं निर्दयता का निराकरण साथ ही खर-दूषण एवं रावण भी अन्धेपन के दोष से मुक्त सिद्ध हो जाते हैं।

श्री शुक्ल जी ! प्रत्येक कवि या लेखक अपनी भाषा को भाषा के अलंकरणों से विभूषित करता है। फिर आदि कवि संस्कृत का प्रकाण्ड विद्वान बाल्मीकि एवं गोस्वामी तुलसीदास जैसे विद्वान एवं प्रतिभावान कवि अपने काव्य की भाषा को भाषा के अलंकरणों से अछूता कैसे रखते अतः उन्होंने भी अपने काव्य को कहावतों, लोकोक्तियों तथा अलंकारों से सजाते हुए सशक्त एवं हृदयहारी बनाया है।

शुक्ल जी—इसमें शूर्पणखाँ का क्या अपमान हुआ ?

मैं—अरे आप अभी नहीं समझे अच्छा तो सुनो—

यदि कोई स्त्री अपने विवाह का प्रस्ताव किसी पुरुष के सामने प्रस्तुत करे और वह पुरुष उसे ठुकरा दे इससे बढ़कर संसार में स्त्री का अपमान और क्या हो सकता है। सूर्पणखाँ ने प्रथम राम के सम्मुख अपने विवाह का प्रस्ताव प्रस्तुत किया। भगवान राम ने इनकार किया तो नाक कटी। फिर लक्ष्मण के सम्मुख प्रस्तुत किया तथा श्रीसीता जी को अपनी इच्छा पूर्ति में बाधक समझकर आक्रमक हुई तो फटकार कर भगा दी गई तो कान भी कट गये। वह अपमानित होकर अपना सा मुँह लेकर भागी तभी सभी को अपनी नाक-कान कटने की बात उसे बतानी पड़ी देखकर कोई नहीं जान पाया।

शुक्ल जी—आज समझ में आया कि भगवान राम ने सर्वत्र मर्यादा की रक्षा की वे वास्तव में मर्यादा पुरुषोत्तम थे। परन्तु एक शंका और शेष रह जाती है कि आदि कवि श्री बाल्मीकि जी ने लिखा है कि "खड्गात्" खड्ग से काटी गई इसका क्या अर्थ है ?

शुक्ल जी—इसमें साँग रूप का लंकार है अतः खड्ग का अर्थ साँगता से वाणी हुआ।

शुक्ल जी—ओहो! अब भ्रान्ति दूर हुई मैं आपका अत्यधिक कृतज्ञ हूँ। कृपया आप इस संवाद को प्रकाशित कराकर जनमानस का कल्याण करें।

नवभारत प्रेस, फो० नं० २२१४२ नादान महल रोड, लखनऊ।